श्रीविद्यास्तोत्रपञ्चकम्

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
इलाहाबाद-२११००६

श्रीविद्यास्तोत्रपञ्चकम्

सम्पादक
'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल
डॉ० विजयनारायण मिश्र

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग,
प्रयाग-राज, २११००६

प्रकाशक :
कल्याण-मन्दिर प्रकाशन
चण्डी-धाम, अलोपीदेवी मार्ग
प्रयागराज (उ०प्र०) २११००६

प्रथम संस्करण :
'गुरुपूर्णिमा', सं० २०५५ वि०
(९ जुलाई, १९९८ ई०)

मूल्य : ४५.००

मुद्रक :
परा वाणी प्रेस
अलोपीदेवी मार्ग, प्रयागराज (उ०प्र०)
दूरभाष : ५०२७८३

कम्प्यूटर-कम्पोजिङ्ग:
ऋतकम्प प्वाइण्ट
सोहबतियाबाग, इलाहाबाद, दूरभाष : ५०४७२१

प्राक्कथन

शाक्त साधकों में, विशेष कर श्री श्रीविद्या के पूर्णाभिषिक्त साधकों में **'पञ्च-स्तवी'** का बड़ा सम्मान है। प्राचीन **'आम्नाय-स्तव'** की पाण्डुलिपियाँ देश के विभिन्न संस्कृत-संग्रहालयों में उपलब्ध हैं। इस **'स्तव'** के अनुसार **'पञ्च-स्तवी'** में निम्नलिखित पाँच स्तवों का सन्निवेश है—

(१) शुद्ध-शक्ति-माला, (२) आम्नाय-स्तव, (३) श्रीललिता-सहस्र-नाम, (४) श्रीललिताम्बा-त्रिशती-स्तव, (५) श्रीत्रिपुरा-स्तव-राज।

अन्तिम पाँचवाँ **'श्रीत्रिपुरा-स्तव-राज' 'पञ्चमी-स्तव-राज'** के नाम से **'बृहत् स्तोत्र-रत्नाकर'** (खण्ड ३, पृष्ठ ३६१-मद्रास, सन् १९०५) में संग्रहीत है। वहाँ उल्लेख है कि यह **'स्तव-राज' 'रुद्र-यामल तन्त्र'** से उद्धृत है। **श्री श्रीविद्या** के **'सहस्र-नाम'** एवं **'त्रिशती-स्तव'** तो बड़े ही लोक-प्रिय हैं और सभी को ज्ञात हैं। इसी प्रकार **'शुद्ध-शक्ति-माला'** भी **'खड्ग-माला'** के नाम से साधकों में व्यापक रूप से प्रचलित है।

'पञ्च-स्तवी' की लोक-प्रियता से आकृष्ट होकर अनेक **पञ्च-स्तवों** के संग्रह प्रकाशित हुए हैं। उदाहरण के लिए **'देवी-पञ्च-स्तवी'** नाम से **'काव्य-माला'**, गुच्छक ३ के अन्तर्गत **कालिदास** की रचना के रूप में प्रकाशित है। इस **स्तव-संग्रह** में निम्न पाँच स्तोत्र समाविष्ट किए गए हैं—

(१) अम्बा-स्तव, (२) चर्चा-स्तव, (३) लघु-स्तव, (४) सकल-जननी-स्तव, (५) मातृका-पुष्प-माला-स्तव।

इनमें अन्तिम **'मातृका-पुष्प-माला-स्तव'** को **'घट-स्तव'** भी कहा गया है। देखिए, **'वाणी-विलास-स्तोत्र बुकलेट सीरीज'**।

महा-महोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज कृत **'तान्त्रिक साहित्य'** में **'पञ्च-स्तवी'** नामक पाण्डुलिपि का उल्लेख है, जिसमें पाँच अध्याय हैं—जिनमें **भगवती दुर्गा** की स्तुति की गई है। इन अध्यायों के नाम हैं—**१. लघु स्तव, २. सरसा स्तव (चर्चा-स्तव), ३. घट-स्तव, ४. अम्बा-स्तव** और **५ सकल-जननी-स्तव।**

'श्रीपीताम्बरा-पीठ-दतिया' द्वारा प्रकाशित **'पञ्च-स्तवी'** नामक पुस्तिका में निम्न पाँच स्तव संग्रहीत हुए हैं—

१. श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-हृदय-स्तोत्र, २. श्री ललिता-हृदय-स्तोत्र, ३. पीतोपनिषद्, ४. पीताम्बरा-माला-मन्त्र और **५. पीताम्बरा-स्तोत्र।**

स्पष्ट ही यह **'पञ्च-स्तवी'** प्राचीन **'पञ्च-स्तवी'** से सर्वथा भिन्न है और विशेषतया **'श्री पीताम्बरा पीठ'** के भक्तों के लिए ही इसका प्रकाशन किया गया है।

शाक्त साधकों की प्राचीन **'कुल-परम्परा'** के अनुसार **'आम्नाय-स्तव'** में निर्दिष्ट **'पञ्च-स्तवी'** ही प्रामाणिक प्रतीत होती है, जैसा कि निम्न वचन से स्पष्ट है—

जपान्ते **'शुद्ध-माला'**[१] च, **'आम्नाय-स्तोत्र'**[२]मुत्तमम् ।
'ललिता-नाम-साहस्रं'[३], **सर्व-पूर्ति-करं स्तवम्'**[४] ।
'स्तव-राजं'[५] च पञ्चैते, भक्तः प्रति-दिनं पठेत् ।।

इसी वचन के आधार पर प्रस्तुत **'श्रीविद्यास्तोत्रपञ्चकम्'** का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है कि शाक्त-साधकों को इससे सन्तोष होगा और वे इसके नियमित पारायण से अपनी साधना में अग्रसर हो सकेंगे।

उल्लेखनीय है कि अड्यार लाइब्रेरी, मद्रास में संगृहीत पाण्डु-लिपि सं० ७२९२ में **'आम्नाय-स्तोत्र'** उपलब्ध है। साथ ही, उसके विनियोग, ध्यानादि भी वहाँ दिए हैं, जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं हैं उस सबको इस संग्रह के पृष्ठ १३ पर समाविष्ट कर दिया गया है। साथ ही **'परिशिष्ट'** में **'तान्त्रिक सन्ध्या'** भी प्रकाशित की गई है।

इस प्रकार यथा-शक्ति इस **'स्तव-संग्रह'** को शुद्ध रूप में प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। किन्तु सम्भव है कि कहीं कोई त्रुटि रह गई हो। विज्ञ पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि ऐसी त्रुटियों की सूचना हमें देने की कृपा करेंगे। अगले संस्करण में तदनुसार सुधारकर दिया जाएगा।

—सम्पादक

'चण्डी-धाम', अलोपीबाग, प्रयागराज
'गुरुपूर्णिमा', २०५५ वि० (९ जुलाई, १९९८)

अनुक्रमः

समर्पण

श्रीगुरुवे नमः
श्रीचन्द्रार्कानन्दनाथाय नमः

'श्रीविद्यास्तोत्रपञ्चकम्' भगवती श्री के उपासकों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। केवल इन पाँच स्तोत्रों का नियमित पाठ किसी दीक्षित साधक को श्री माँ की कृपा प्राप्त करा सकता है। इन स्तोत्रों की **'फल-श्रुतियाँ'** इसका डिण्डिम घोष करती हैं। इसको अर्थवाद न समझें।

मुझे यह **'क्रम'** श्रीसद्गुरु की कृपा से उपलब्ध हुआ था। स्तोत्र तो प्रायः लोगों को ज्ञात हैं, लेकिन इनका **'क्रम'** अज्ञात रहा है। **'गुरुपूर्णिमा'** के महापर्व पर मेरे ऐसा अकिञ्चन क्या दे सकता है! श्रीगुरुचरणों में यह **'स्तोत्र-पुष्पाञ्जलि'**, जैसी भी मुद्रित हो सकी है, समर्पित है।

गुरुचरणानुरागी
आनन्दानन्दनाथ
(दीक्षानाम)

प्रयाग, **'गुरुपूर्णिमा'**
९ जुलाई, १९९८

१. शुद्धशक्तिमाला

(पूर्वपीठिका)

।।श्रीपार्वत्युवाच।।

भगवन् ! देवदेवेश !, सर्वज्ञ ! करुणानिधे !
शुद्धशक्तिमहामन्त्रं, ब्रूहि मे सकलेष्टदम् ।।१

।। श्रीईश्वर उवाच ।।

श्रृणु देवि! प्रवक्ष्यामि, यन्मां त्वं परिपृच्छसि ।
यस्य स्मरणमात्रेण, चक्रपूजाफलं लभेत् ।।२
शुद्ध नमोऽन्ताः स्वाहान्तास्तर्पणान्ता जयान्तकाः ।
प्रवृत्तयः पञ्चधा स्युर्मालासु निखिलास्वपि ।।३
शुद्धायाः शक्तिमालाया, जपस्तेन विधीयते ।
पञ्चधा जायते नित्यं, पुरश्चर्याफलं लभेत् ।।४
एषा विद्या महाविद्या, समयाचारवर्त्तिनी ।
अतिवीर्यतरा विद्या, सूर्यकोटिसमप्रभा ।।५
कुलाङ्गना कुलं सर्वं, मदीयं परमेश्वरि !
देवी रक्षतु सर्वाङ्गं, दिव्याङ्गं भोगदायिनी ।।६
निरालम्बे महातल्पे, लीयमाना सुरेश्वरी ।
हुङ्कारं च ततः कृत्वा, पूजयेद् भुवि मण्डले ।।७
पूजान्ते वामहस्तेन, ह्रीङ्कारं त्रिविधं जपेत् ।
पश्चात् त्रिपुरमन्त्रेण, मूलमन्त्रेण शङ्करि! ।।८

नवावरणदेवीनां, ललितायाः महौजसः ।
एकत्र गणनारूपो, मन्त्रो मन्त्रार्थगोचरः ।
मालामन्त्रविधानेन, क्रमेणोच्चारणं भवेत् ।।९

सङ्कल्पः—ॐ अद्येत्यादि मम श्रीराजराजेश्वरीमहात्रिपुर-सुन्दरीदेवताप्रसादसिद्धिद्वारा सर्वाभीष्टप्राप्त्यर्थं शुद्धशक्ति-खड्गमालामन्त्रपाठाख्यं कर्म करिष्ये।

विनियोगः—ॐ नमोऽस्य श्रीशुद्धशक्तिखड्गमालामन्त्रस्य उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायी वरुणादित्य ऋषिः। गायत्री छन्दः। सात्विककककारभट्टारकपीठस्थित-शिवकामेश्वराङ्कनिलया कामेश्वरीललितामहाभट्टारिका देवता। ऐं क-५ बीजं। क्लीं ह-६ शक्तिः। सौः स-४ कीलकं। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः—उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायिने वरुणादित्यऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। सात्विककककार-भट्टारकपीठस्थितशिवकामेश्वराङ्कनिलयायै कामेश्वरीललिता-महाभट्टारिकायै देवतायै नमः हृदये। ऐं क-५ बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं ह-६ शक्तये नमः नाभौ। सौः स-४ कीलकाय नमः पादयोः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनि-योगाय नमः सर्वाङ्गे।

'मूलेन' व्यापकं कुर्यात् । ध्यानम् —

अरुणां करुणा तरङ्गिताक्षीं, धृतपाशाङ्कुशवाणचापहस्ताम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ।।
अतिमधुर - चापहस्तामपरिमित - मोदमानसौभाग्याम् ।
अरुणामतिशय - करुणामभिनव - कुलसुन्दरीं वन्दे ।।

मानसोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् । यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हस्ख्फ्रीं हस्ख्फ्रौं श्रीं ह्रीं ऐं समयिनि, मदिरानन्दसुन्दरि, समस्तसुरासुरवन्दिते, भुजङ्ग-भूपालमौलिमालार्चितचरणकमले, विकटदन्तखटाटोपनिवा-रिणि! मदीयं शरीरं वज्रमयं कुरु कुरु, दुर्जनं हन हन, दुष्टमहीपालान् क्षोभय क्षोभय, परचक्रं भञ्जय भञ्जय। जयङ्करि, गगनगायिनि, त्रैलोक्यस्वामिनि! डमलवरयूँ रमलवरयूँ लमलवरयूँ कमलवरयूँ समलवरयूँ हमलवरयूँ यमलवरयूँ श्रीभैरवि! प्रसीद प्रसीद स्वाहा।

ध्यानम्—

तादृशं खड्गमाप्नोति, येन हस्तस्थितेन वै ।
अष्टादशमहाद्वीपसम्राट् भोक्ता भविष्यति ॥

'ह्रां, ह्रीं' इत्यादिना षडङ्गन्यासं कृत्वा मालामन्त्रं जपेत्। यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमस्त्रिपुरसुन्दरि हृदयदेवि शिरोदेवि शिखादेवि कवचदेवि नेत्रदेव्यस्त्रदेवि कामेश्वरि भगमालिनि नित्यक्लिन्ने भेरुण्डे वह्निवासिनि महावज्रेश्वरि शिवदूति त्वरिते कुलसुन्दरि नित्ये नीलपताके विजये सर्वमङ्गले ज्वालामालिनि चित्रे महानित्ये परमेश्वर-परमेश्वरि मित्रीशमयि षष्ठीशमय्युड्डीशमयि चर्यानाथमयि लोपामुद्रामय्यगस्त्यमयि कालतापनमयि धर्माचार्यमयि मुक्तकेशीश्वरमयि दीपकलानाथमयि विष्णुदेवमयि प्रभाकर-देवमयि तेजोदेवमयि मनोजदेवमयि कल्याणदेवमयि रत्नदेवमयि वासुदेवमयि श्रीरामानन्दमय्यणिमासिद्धे लघि-मासिद्धे महिमासिद्धे ईशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे प्राकाम्यसिद्धे भुक्तिसिद्धे इच्छासिद्धे प्राप्तिसिद्धे सर्वकामसिद्धे ब्राह्मि

माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि माहेन्द्रि चामुण्डे महालक्ष्मि सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्ववशङ्करि सर्वोन्मादिनि सर्वमहाङ्कुशे सर्वखेचरि सर्वबीजे सर्वयोने सर्वत्रिखण्डे त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि प्रकटयोगिनि कामाकर्षिणि बुद्ध्याकर्षिण्यहङ्काराकर्षिणि शब्दाकर्षिणि स्पर्शाकर्षिणि रूपाकर्षिणि रसाकर्षिणि गन्धाकर्षिणि चित्ताकर्षिणि धैर्याकर्षिणि स्मृत्याकर्षिणि नामाकर्षिणि बीजाकर्षिण्यात्माकर्षिण्यमृताकर्षिणि शरीराकर्षिणि सर्वाशा-परिपूरकचक्रस्वामिनि गुप्तयोगिन्यनङ्गकुसुमेऽनङ्गमेखलेऽनङ्ग-मदनेऽनङ्गमदनातुरेऽनङ्गरेखेऽनङ्गवेगिन्यनङ्गाङ्कुशेऽनङ्ग-मालिनि सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि गुप्ततरयोगिनि सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्वाह्लादिनि सर्वसम्मोहिनि सर्वस्तम्भिनि सर्वजृम्भिणि सर्ववशङ्करि सर्वरञ्जिनि सर्वोन्मादिनि सर्वार्थसाधिनि सर्वसम्पत्तिपूरिणि सर्वमन्त्रमयि सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनि सम्प्रदाय-योगिनि सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसम्पत्प्रदे सर्वप्रियङ्करि सर्वमङ्गलकारिणि सर्वकामप्रदे सर्वदुःखविमोचिनि सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वविघ्ननिवारिणि सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वसौभाग्यदायिनि सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि कुलोत्तीर्ण-योगिनि सर्वज्ञे सर्वशक्ते सर्वैश्वर्यप्रदे सर्वज्ञानमयि सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वाधारस्वरूपे सर्वपापहरे सर्वानन्दमयि सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वेप्सितप्रदे सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि निगर्भयोगिनि वशिनि कामेश्वरि मोदिनि विमलेऽरुणे जयिनि सर्वेश्वरि कौलिनि सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि रहस्ययोगिनि बाणिनि चापिनि पाशिन्यङ्कुशिनि महाकामेश्वरि महावज्रेश्वरि महाभगमालिनि महाश्रीसुन्दरि सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यति-

रहस्ययोगिनि श्रीश्रीमहाभट्टारिके सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि परापररहस्ययोगिनि त्रिपुरे त्रिपुरेशि त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरवासिनि त्रिपुराश्रीस्त्रिपुरमालिनि त्रिपुरासिद्धे त्रिपुराम्ब महात्रिपुरसुन्दरि महामाहेश्वरि महामहाराज्ञि महामहाशक्ते महामहागुप्ते महामहाज्ञप्ते महामहानन्दे महामहास्पन्दे महामहाशये महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञि! नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलकौल-निगर्भरहस्यातिरहस्यपरापररहस्ययोगिनि श्रीविद्याराजराजे-श्वरि! श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

पुष्पाञ्जलिं निवेद्य, '**मूलेन**' न्यासं विधाय, मानसोपचारैः पूजयेत्।

फलश्रुति

मालामन्त्रो महादेव्याः, सर्वसिद्धिप्रदायकः ।
एकत्रिंशत्सहस्त्रार्णैस्त्रिलोकीमोहनक्षमः ।।१

एषा विद्या महासिद्धिदायिनी स्मृतिमात्रतः ।
अग्निवातमहाक्षोभे, राजराष्ट्रस्य विप्लवे ।।२

लुण्ठने तस्करभये, संग्रामे सलिलप्लवे ।
समुद्रयानविक्षोभे, भूतप्रेतादिजे भये ।।३

अपस्मारज्वरव्याधिमृत्यून्मादादिजे भये ।
डाकिनीपूतनायक्षरक्षःकूष्माण्डजे भये ।।४

मित्रभेदे ग्रहभये, व्यसने चाभिचारके ।
अन्येष्वपि च दोषेषु, मालामन्त्रं स्मरेद् बुधः ।।५

सर्वोपद्रवनिर्मुक्तः, सर्वव्याधिविवर्जितः ।
सर्वदा पूर्णहृदयः, साक्षाच्छिवमयो भवेत् ।।६
आपत्काले नित्यपूजां, विस्तरात् कर्तुमक्षमः।
एकावर्तनमात्रेण, चक्रपूजाफलं लभेत् ।।७
नवावरणदेवीनां, ललिताया महौजसः ।
एकत्र गणनारूपो, यन्त्रमन्त्रार्थगोचरः ।।८
सर्वागमरहस्यार्थः, स्मरणात् पापनाशिनी ।
नरेन्द्राणां नारीणां, सर्वदैव वशङ्करी ।।९
ललिताया महेशान्या, मालाविद्या महीयसी ।
अणिमादिगणैश्वर्यैः, रञ्जनी पापभञ्जनी ।।१०
तत्तथाऽऽवरणस्थायि, देवतावृन्दमन्त्रजम् ।
मालामन्त्रो महादेव्याः, सर्वकार्यार्थसिद्धिदः ।।११
इदं स्तोत्रं महादेव्याः, सर्वलोकविमोहनम् ।
सर्वसौख्यप्रदं नृणां, सर्वसौभाग्यदायकम् ।।१२

अनेन शुद्धशक्तिमालामन्त्रजपाख्येन कर्मणा भगवती राजराजेश्वरीश्रीमहात्रिपुरसुन्दरी प्रीयताम् ।

।। ॐ तत्सत् ।।
उमामहेश्वरसम्वादे शुद्धशक्ति-
मालास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

२. आम्नायस्तोत्रम्

विनियोगः— ॐ अस्य श्रीआम्नायस्तोत्रमहामन्त्रस्य आनन्दभैरव ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। आम्नायदेवो देवता। ऐं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। श्रीं कीलकम्। इष्टार्थे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीआनन्दभैरवऋषये नमः शिरसि। गायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे। आम्नायदेवदेवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः नाभौ। श्रीं कीलकाय नमः पादयोः। इष्टार्थे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यासः

	करन्यासः	अङ्गन्यासः
ह्रां	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुँ
ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
ह्रः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

'भूर्भुवः स्वः ॐ' इति मन्त्रेण दिग्बन्धनं कुर्यात् ।

ध्यानम् —

पूर्वं दक्षिणपश्चिमोत्तरमधश्चोर्ध्वं तथाऽनुत्तरं,
द्विस्त्रोतश्च गुरुत्रयं त्रिचरणं वन्दे महद्वासनम् ।
पञ्चाम्बानवनाथषोडशषडाधाराश्च षड्दर्शनं,
वन्दे द्व्यष्टषडङ्गपञ्चकरहस्याम्नायरत्नस्तुतौ।।

पञ्चोपचारैः सम्पूज्य स्तोत्रपाठं कुर्यात्।

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम् ।
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् ।।
वीरान् द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकम् ।
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ।।

गुरुपादुकामनुमुच्चार्य, सुमुखादिभिः पञ्चमुद्राभिः श्रीगुरुं प्रणम्य —

शुद्धविद्या च बाला च, द्वादशार्धा मतङ्गिनी ।
द्विजत्वसाधिनी विद्या, गायत्री वेदमातृका ।।१
गाणपत्यं कार्तिकेयं, मृत्युञ्जं नीलकण्ठकम् ।
त्र्यम्बकं जातवेदाश्च, तथा प्रत्यङ्गिरादयः ।।२
मुखात् तत्पुरुषाज्जाता, द्विकोटीमन्त्रनायिकाः ।
एताः कामगिरीन्द्राश्च, पूर्वाम्नायस्य देवताः ।।३
गुरुत्रयादिपीठान्तं, चतुर्विंशत्सहस्रकम् ।
एतदावरणोपेतं, पूर्वाम्नायं भजाम्यहम् ।।४
विशुद्धौ चिन्तयेद्धीमान्, पूर्वाम्नायस्य देवताः ।
सौभाग्यविद्या वगला, वाराही वटुकस्तथा ।।५
श्रीतिरस्करिणी प्रोक्ता, महामाया प्रकीर्तिता ।
अघोरं शरभं खड्गरावणं वीरभद्रकम् ।।६
रौद्रं शास्ता पाशुपताद्यस्त्र-शस्त्रादिभैरवाः ।
दक्षिणामूर्तिमन्त्राद्याः, शैवागमसमुद्भवाः ।।७
अघोरमुखसम्भूतं, मदंशं कोटिसंख्यकम् ।
पूर्वपीठस्थिता देवि ! दक्षिणाम्नायदेवताः ।।८
द्विसहस्रं तु देव्यस्ताः, परिवारसमन्विताः ।
भैरवादिपदद्वन्द्वं, भजे दक्षिणमुत्तमम् ।।९
अनाहते चिन्तयेच्च, दक्षिणाम्नायदेवताः ।
लोपामुद्रा महादेवी, अम्बा च भुवनेश्वरी ।।१०

अन्नपूर्णा कामकला, सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।
सुदर्शनं वैनतेयं, कार्तवीर्यं नृसिंहकम् ।।११
नामत्रयं राममन्त्रं, गोपालं सौरमेव च ।
धन्वन्तरीन्द्रजालं च, इन्द्रादिसुरमन्त्रकम् ।।१२
दत्तात्रेयं द्वादशाष्टौ, वैष्णवागमचोदिताः ।
सद्योजातमुखोद्भूता, मन्त्राः स्युः कोटिसंख्यकाः ।।१३
एता जालन्ध्रपीठस्थाः, पश्चिमाम्नायदेवताः ।
दूत्यादि च चतुष्षष्टि, सिद्धान्तं त्रिसहस्त्रकम् ।।१४
आम्नायं पश्चिमं वन्दे, सर्वदा सर्वकामदम् ।
मणिपूरे चिन्तनीयाः, पश्चिमाम्नायदेवताः ।।१५
तुरीयाम्बा महार्घा च, अश्वारूढा तथैव च ।
मिश्राम्बा च महालक्ष्मीः, श्रीमद्वाग्वादिनी अपि ।।१६
दुर्गा काली ततश्चण्डी, नकुली च पुलिन्दिनी ।
रेणुका लक्ष्मिवागीशमातृकाद्याः स्वयम्वरा ।।१७
पञ्चाम्नायसमोपेतं, श्रीविद्याख्यं मदंशकम् ।
वामदेवमुखोद्भूता, द्विकोटीमन्त्रनायिकाः ।।१८
एता ओड्याणपीठस्थाः, शाक्तागमसमुद्भवाः ।
द्विसहस्त्रं तु देव्यस्ताः, परिवारसमन्विताः ।।१९
मुद्रादिनवकं चैव, सिद्धानां मिथुनं तथा ।
वीरावलीपञ्चकं च, भजेदाम्नायमुत्तरम् ।।२०
स्वाधिष्ठाने चिन्तनीया, उत्तराम्नायदेवताः ।
परापरा च सा देवी, परा शाम्भवमेव च ।।२१
प्रासादं दहरं हंसं, महावाक्यादिकं परम् ।
पञ्चाक्षरं महामन्त्रं, तारकं जन्मतारकम् ।।२२
ईशानमुखसम्भूतं, स्वात्मानन्दप्रकाशकम् ।
कोटिसंख्या महादेवि! मद्रूपाः सर्वसिद्धिदाः ।।२३

एताः शाम्भवपीठस्थाः, सहस्रपरिवारिताः ।
आराध्य मालिनीपूर्वं, मण्डलान्तं तथैव च ।।२४
सायुज्यहेतुकं नित्यं, वन्दे चोर्ध्वमकल्मषम् ।
ऊर्ध्वाम्नायमनून् नित्यं, मूलाधारे विभावयेत् ।।२५
पञ्चाम्बा नवनाथाश्च, मूलविद्यास्ततः परम् ।
आधारविद्याषट्कं च, पुनरंघ्रिद्वयं क्रमात् ।।२६
शाम्भवी चाथ हृल्लेखा, समया परबोधिनी ।
कौलपञ्चाक्षरी पञ्चदशार्णाऽनुत्तरात्मिका ।।२७
षोडशी पूर्तिविद्या च, महात्रिपुरसुन्दरी ।
ऊर्ध्वश्रीपादुकापूर्वं, चरणान्तं गुरुक्रमात् ।।२८
पश्चादनुत्तरं वन्दे, परब्रह्मस्वरूपिणीम् ।
अनुत्तराम्नायमनूनाज्ञाचक्रे विभावयेत् ।।२९
श्रीनाथगुरुमन्त्रादीन्, मण्डलान्तं यथाक्रमम् ।
सप्तकोटिमहामन्त्रं, द्वादशान्ते सदा स्मरेत् ।।३०
शुचिर्वाप्यशुचिर्वापि, गच्छंस्तिष्ठन् स्वपन्नपि ।
मन्त्रैकशरणो विद्वान्, मनसाऽपि सदा स्मरन् ।।३१
तत्तत्सिद्धिं च साहस्रं, जपेत् साधकपुङ्गवः ।
जपान्ते शुद्धमाला च, आम्नायस्तोत्रमुत्तमम् ।।३२
ललितानामसाहस्रं, सर्वपूर्तिकरं स्तवम् ।
स्तवराजं च पञ्चैते, भक्तः प्रतिदिनं पठेत् ।।३३
भुक्त्वा भोगान् यथाकामं, सर्वभूतहिते रतः ।
सभार्यापुत्रसौभाग्यः, सभूतिः पशुमान् भवेत् ।।३४
एकवारं जपेदेतत्, कोटियज्ञफलं लभेत् ।
एतद्विज्ञानमात्रेण, सर्वेषां देशिकोत्तमः ।
शिवसायुज्यमाप्नोति, शिवयोरेव शासनात् ।।३५

।।श्रीरुद्रयामलतन्त्रे उमामहेश्वरसंवादे शिवेन विरचितं आम्नायस्तोत्रम् ।।

३. श्रीललितासहस्त्रनाम

(पूर्वपीठिका)

।। श्रीअगस्त्य उवाच ।।

अश्वानन! महाबुद्धे! सर्वशास्त्रविशारद !
पूर्व प्रादुर्भावो मातुस्ततः पट्टाभिषेचनम् ।।१
कथितं ललितादेव्याश्चरितं परमाद्भुतम् ।
भण्डासुरवधश्चैव, विस्तरेण त्वयोदितः ।।२
वर्णितं श्रीपुरं चापि, महाविभवविस्तरम् ।
श्रीमत्पञ्चदशाक्षर्या, महिमा वर्णितस्तथा ।।३
षोढान्यासादयो न्यासा, न्यासखण्डे समीरिताः ।
अन्तर्यागक्रमश्चैव, बहिर्यागक्रमस्तथा ।।४
महायागक्रमश्चैव, पूजाखण्डे प्रकीर्तिताः ।
पुरश्चरणखण्डे तु, जपलक्षणमीरितम् ।।५
होमखण्डे त्वया प्रोक्तो, होमद्रव्यविधिक्रमः ।
चक्रराजस्य विद्यायाः, श्रीदेव्या देशिकात्मनोः ।।६
रहस्यखण्डे तादात्म्यं, परस्परमुदीरितम् ।
स्तोत्रखण्डे बहुविधाः, स्तुतयः परिकीर्तिताः ।।७
मन्त्रिणीदण्डिनीदेव्योः, प्रोक्ते नामसहस्त्रके ।
न तु श्रीललितादेव्याः, प्रोक्तं नामसहस्त्रकम् ।।८
तत्र मे संशयो जातो, हयग्रीव ! दयानिधे !
किं वा त्वया विस्मृतं तज्ज्ञात्वा वा समुपेक्षितम् ।।९
मम वा योग्यता नास्ति, श्रोतुं नामसहस्त्रकम् ।
किमर्थं भवता नोक्तं, तत्र मे कारणं वद ।।१०

॥ श्रीसूत उवाच ॥

इति पृष्टो हयग्रीवो, मुनिना कुम्भजन्मना ।
प्रहृष्टो वचनं प्राह, तापसं कुम्भसम्भवम् ॥११

॥ श्रीहयग्रीव उवाच ॥

लोपामुद्रापतेऽगस्त्य ! सावधानमनाः शृणु ।
नाम्नां सहस्रं यन्नोक्तं, कारणं तद् वदामि ते ॥१२
रहस्यमिति मत्वाऽहं, नोक्तवांस्ते न चान्यथा ।
पुनश्च पृच्छसे[1] भक्त्या, तस्मात् तत्ते वदाम्यहम् ॥१३
ब्रूयाच्छिष्याय भक्ताय, रहस्यमपि देशिकः ।
भवता न प्रदेयं स्यादभक्ताय कदाचन ॥१४
न शठाय न दुष्टाय, नाविश्वासाय कर्हिचित् ।
श्रीमातृभक्तियुक्ताय, श्रीविद्याराजवेदिने ॥१५
उपासकाय शुद्धाय, देयं नामसहस्रकम् ।
यानि नामसहस्राणि, सद्यः सिद्धिप्रदानि वै ॥१६
तन्त्रेषु ललितादेव्यास्तेषु मुख्यमिदं मुने !
श्रीविद्यैव तु मन्त्राणां, तत्र कादिर्यथा परा ॥१७
पुराणां श्रीपुरमिव, शक्तीनां ललिता यथा ।
श्रीविद्योपासकानां च, यथा देवो वरः शिवः ॥१८
तथा नामसहस्रेषु, वरमेतत्प्रकीर्तितम् ।
यथाऽस्य पठनाद्देवी, प्रीयते ललिताऽम्बिका ॥१९
अन्यनामसहस्रस्य, पाठान्न प्रीयते तथा ।
श्रीमातुः प्रीतये तस्मादनिशं कीर्तयेदिदम् ॥२०

---

१. पृच्छते।

बिल्वपत्रैश्चक्रराजे, योऽर्चयेल्ललिताऽम्बिकाम् ।
पद्मैर्वा तुलसीपुष्पैरेभिर्नामसहस्रकैः ।।२१
सद्यः प्रसादं कुरुते, तत्र सिंहासनेश्वरी[1] ।
चक्राधिराजमभ्यर्च्य, जप्त्वा पञ्चदशाक्षरीम् ।।२२
जपान्ते कीर्तयेन्नित्यमिदं नामसहस्रकम् ।
जपपूजाद्यशक्तोऽपि[2], पठेन्नामसहस्रकम् ।।२३
साङ्गार्चने साङ्गजपे, यत्फलं तदवाप्नुयात् ।
उपासने स्तुतीरन्याः, पठेदभ्युदयो हि सः ।।२४
इदं नामसहस्रं तु, कीर्तयेन्नित्यकर्मवत्[3] ।
चक्रराजार्चनं देव्या, जपो नाम्नां च कीर्तनम् ।।२५
भक्तस्य कृत्यमेतावदन्यदभ्युदयं विदुः ।
भक्तस्यावश्यकमिदं, नामसाहस्रकीर्तनम् ।।२६
तत्र हेतुं प्रवक्ष्यामि, शृणु त्वं कुम्भसम्भव !
पुरा श्रीललितादेवी, भक्तानां हितकाम्यया ।।२७
वाग्देवीर्वशिनीमुख्याः समाहूयेदमब्रवीत् ।

।। श्रीदेव्युवाच ।।

वाग्देवता वशिन्याद्याः ! शृणुध्वं वचनं मम ।।२८
भवत्यो मत्प्रसादेन, प्रोल्लसद्वाग्विभूतयः ।
मद्भक्तानां वाग्विभूतिप्रदाने विनियोजिताः ।।२९

---

१. श्रीमत्-सिंहासनेश्वरी, २. शक्तश्चेत्, ३. कर्म-वित्।

मच्चक्रस्य रहस्यज्ञा, मम नामपरायणाः ।
मम स्तोत्रविधानाय, तस्मादाज्ञापयामि वः ।।३०

कुरुध्वमङ्कितं स्तोत्रं, मम नामसहस्रकैः ।
येन भक्तैः स्तुताया मे, सद्यः प्रीतिः परा भवेत् ।।३१

।। श्रीहयग्रीव उवाच ।।

इत्याज्ञप्ता वचो देव्यः[१], श्रीदेव्या ललिताऽम्बया[२]।
रहस्यैर्नामभिर्दिव्यैश्चक्रः[३] स्तोत्रमनुत्तमम् ।।३२

रहस्यनामसाहस्रमिति तद्विश्रुतं परम् ।
ततः कदाचित्सदसि, स्थित्वा सिंहासनेऽम्बिका ।।३३

स्वसेवाऽवसरं प्रादात्, सर्वेषां कुम्भसम्भव !
सेवार्थमागतास्तत्र, ब्रह्माणी ब्रह्मकोटयः ।।३४

लक्ष्मीनारायणानां च, कोटयः समुपागताः ।
गौरीकोटिसमेतानां, रुद्राणामपि कोटयः ।।३५

मन्त्रिणीदण्डिनीमुख्याः, सेवार्थं याः समागताः ।
शक्तयो विविधाकारास्तासां संख्या न विद्यते ।।३६

दिव्यौघा मानवौघाश्च, सिद्धौघाश्च समागताः।
तत्र[४] श्रीललितादेवी, सर्वेषां दर्शनं ददौ ।।३७

तेषु दृष्ट्वोपविष्टेषु, स्वे स्वे स्थाने यथाक्रमम् ।
तत्र[५] श्रीललितादेवीकटाक्षाक्षेपनोदिताः[६] ।।३८

उत्थाय वशिनीमुख्या, बद्धाञ्जलिपुटास्तदा ।
अस्तुवन्नामसाहस्रैः, स्वकृतैर्ललिताऽम्बिकाम् ।।३९

---

१. देव्यो, २. देव्यो श्रीललिताऽम्बया, ३.चक्रुः,४.ततः, ५.ततः,
६. कटाक्षाक्षेप चोदिताः ।

श्रुत्वा स्तवं प्रसन्नाऽभूल्ललिता परमेश्वरी ।
सर्वे ते विस्मयं जग्मुर्ये तत्र सदसि स्थिताः ।।४०
ततः प्रोवाच ललिता, सदस्यान्देवतागणान् ।

।। श्रीदेव्युवाच ।।

ममाज्ञयैव वाग्देव्यश्चक्रुः स्तोत्रमनुत्तमम् ।।४१
अङ्कितं नामभिर्दिव्यैर्मम प्रीतिविधायकैः ।
तत्पठध्वं सदा यूयं, स्तोत्रं मत्प्रीतिवृद्धये ।।४२
प्रवर्तयध्वं भक्तेषु, मम नामसहस्रकम् ।
इदं नामसहस्रं मे, यो भक्तः पठते सकृत्[1] ।।४३
मम[2] प्रियतमो ज्ञेयस्तस्मै कामान्ददाम्यहम् ।
श्रीचक्रे मां समभ्यर्च्य, जप्त्वा पञ्चदशाक्षरीम् ।।४४
पश्चान्नामसहस्रं मे, कीर्तयेन्मम तुष्टये ।
मामर्चयतु वा मा वा, विद्यां जपतु वा न वा ।।४५
कीर्तयेन्नामसाहस्रमिदं मत्प्रीतये सदा ।
मत्प्रीत्या सकलान् कामाँल्लभते नात्र संशयः ।।४६
तस्मान्नामसाहस्रं मे, कीर्तयध्वं सदाऽऽदरात् ।

।। श्रीहयग्रीव उवाच ।।

इति श्रीललितेशानी, शास्ति देवान्सहानुगान्[3] ।।४७
तदाज्ञया तदारभ्य, ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।
शक्तयो मन्त्रिणीमुख्या, इदं नामसहस्रकम् ।।४८
पठन्ति भक्त्या सततं, ललितापरितुष्टये ।
तस्मादवश्यं भक्तेन, कीर्तनीयमिदं मुने ! ।।४९
आवश्यकत्वे हेतुस्ते[4], मया प्रोक्तो मुनीश्वर !
इदानीं नामसाहस्रं, वक्ष्यामि श्रद्धया शृणु ।।५०

१.ऽसकृत्, २. स मे, ३. आज्ञपयामास तदा, लोकानुग्रह-हेतवे, ४. हेतुश्च।

(मूलपाठः)

।। विनियोगः ।।

ॐ अस्य श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रमालामन्त्रस्य श्रीवशिन्यादिवाग्देवता ऋषयः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीललिता-ऽम्बा देवता। कएईलह्रीं बीजम्। सकलह्रीं शक्तिः। हसकहलह्रीं कीलकम्। श्रीललिताऽम्बाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

।। ऋष्यादिन्यासः ।।

श्रीवशिन्यादिवाग्देवताऋषिभ्यो नमः शिरसि। अनुष्टप्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीललिताऽम्बादेवतायै नमः हृदि। कएईलह्रीं - बीजाय नमः गुह्ये। सकलह्रीं-शक्तये नमः पादयोः। हसकहलह्रीं-कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। श्रीललिता-ऽम्बाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

।। षडङ्गन्यासः ।।

		करन्यासः	अङ्गन्यासः
ऐं	क-५	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं	ह-६	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः	स-४	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं	क-५	अनामाभ्यां नमः	कवचाय हुं
क्लीं	ह-६	कनिष्ठाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
सौः	स-४	करतल-करपृष्ठाभ्यांनमः	अस्त्राय फट्

।। ध्यानम् ।।

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्–
तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीम्,
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम्।।

।। मानसपूजनम् ।।

लं पृथितत्त्वात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः–अधोमुख कनिष्ठा-अंगुष्ठ से। **हं आकाशतत्त्वात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः**–अधोमुख तर्जनी-अंगुष्ठ से। **यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि नमः**–ऊर्ध्वमुख तर्जनी-अंगुष्ठ से। **रं वह्नितत्त्वात्मकं दीपं दर्शयामि नमः**–ऊर्ध्वमुख मध्यमा-अंगुष्ठ से। **वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः**–ऊर्ध्वमुख अनामा-अंगुष्ठ से। **सं सर्वतत्त्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः**–ऊर्ध्वमुख सर्वांगुलि से।

।। श्रीहयग्रीव उवाच ।।

श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी, श्रीमत्सिंहासनेश्वरी ।
चिदग्निकुण्डसम्भूता, देवकार्यसमुद्यता ।।१
उद्यद्भानुसहस्राभा, चतुर्बाहुसमन्विता ।
रागस्वरूपपाशाढ्या, क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वला ।।२
मनोरूपेक्षुकोदण्डा, पञ्चतन्मात्रसायका ।
निजारुणप्रभापूरमज्जद्ब्रह्माण्डमण्डला ।।३
चम्पकाशोकपुन्नागसौगन्धिकलसत्कचा ।
कुरुविन्दमणिश्रेणीकनत्कोटीरमण्डिता ।।४
अष्टमीचन्द्रविभ्राजदलिकस्थलशोभिता ।
मुखचन्द्रकलङ्काभमृगनाभिविशेषका ।।५
वदनस्मरमाङ्गल्यगृहतोरणचिल्लिका ।
वक्त्रलक्ष्मीपरीवाहचलन्मीनाभलोचना ।।६
नवचम्पकपुष्पाभनासादण्डविराजिता ।
ताराकान्तितिरस्कारिनासाऽऽभरणभासुरा ।।७

कदम्बमञ्जरीक्लृप्तकर्णपूरमनोहरा ।
ताटङ्कयुगलीभूततपनोडुपमण्डला ॥८

पद्मरागशिलाऽऽदर्शपरिभाविकपोलभूः ।
नवविद्रुमबिम्बश्रीन्यक्कारिदशनच्छदा[१] ॥९

शुद्धविद्याङ्कुराकारद्विजपङ्क्तिद्वयोज्ज्वला ।
कर्पूरवीटिकामोदसमाकर्षि[२]दिगन्तरा ॥१०

निजसंल्लापमाधुर्यविनिर्भर्त्सितकच्छपी ।
मन्दस्मितप्रभापूरमज्जत्कामेशमानसा ॥११

अनाकलितसादृश्यचिबुकश्रीविराजिता ।
कामेशबद्धमाङ्गल्यसूत्रशोभितकन्धरा ॥१२

कनकाङ्गदकेयूरकमनीयभुजान्विता ।
रत्नग्रैवेयचिन्ताकलोलमुक्ताफलान्विता ॥१३

कामेश्वरप्रेमरत्नमणिप्रतिपणस्तनी ।
नाभ्यालवालरोमालिलताफलकुचद्वयी ॥१४

लक्ष्यरोमलताधारतासमुन्नेयमध्यमा ।
स्तनभारदलन्मध्यपट्टबन्धवलित्रया ॥१५

अरुणारुणकौसुम्भवस्त्रभास्वत्कटीतटी ।
रत्नकिङ्किणिकारम्यरशनादामभूषिता ॥१६

कामेशज्ञातसौभाग्यमार्दवोरुद्वयान्विता ।
माणिक्यमुकुटाकारजानुद्वयविराजिता ॥१७

इन्द्रगोपपरिक्षिप्तस्मरतूणाभजङ्घिका ।
गूढगुल्फा कूर्मपृष्ठजयिष्णुप्रपदान्विता ॥१८

नखदीधितिसञ्छन्ननमज्जनतमोगुणा ।
पदद्वयप्रभाजालपराकृतसरोरुहा ॥१९

---

१. रदनच्छदा, २. समाकर्षद् ।

शिञ्जानमणिमञ्जीरमण्डितश्रीपदाम्बुजा ।
मरालीमन्दगमना, महालावण्यशेवधिः ।।२०
सर्वारुणाऽनवद्याङ्गी, सर्वाभरणभूषिता ।
शिवकामेश्वराङ्कस्था, शिवा स्वाधीनवल्लभा ।।२१
सुमेरुमध्यशृङ्गस्था, श्रीमन्नगरयिका ।
चिन्तामणिगुहान्तस्था[1], पञ्चब्रह्मासनस्थिता ।।२२
महापद्माटवीसंस्था, कदम्बवनवासिनी ।
सुधासागरमध्यस्था, कामाक्षी कामदायिनी ।।२३
देवर्षिगणसङ्घातस्तूयमानात्मवैभवा ।
भण्डासुरवधोद्युक्तशक्तिसेनासमन्विता ।।२४
सम्पत्करीसमारूढसिन्धुरव्रजसेविता ।
अश्वारूढाऽधिष्ठिताश्वकोटिकोटिभिरावृता ।।२५
चक्रराजरथारूढसर्वायुधपरिष्कृता ।
गेयचक्ररथारूढमन्त्रिणीपरिसेविता ।।२६
किरिचक्ररथारूढदण्डनाथापुरस्कृता ।
ज्वालामालिनिकाक्षिप्तवह्निप्राकारमध्यगा ।।२७
भण्डसैन्यवधोद्युक्तशक्तिविक्रमहर्षिता ।
नित्यापराक्रमाटोपनिरीक्षणसमुत्सुका ।।२८
भण्डपुत्रवधोद्युक्तबालाविक्रमनन्दिता ।
मन्त्रिण्यम्बाविरचितविशुक्र[2] वधतोषिता ।।२९
विषङ्ग[3] प्राणहरणवाराहीवीर्यनन्दिता ।
कामेश्वरमुखालोककल्पितश्रीगणेश्वरा ।।३०
महागणेशनिर्भिन्नविघ्नयन्त्रप्रहर्षिता ।
भण्डासुरेन्द्रनिर्मुक्तशस्त्रप्रत्यस्त्रवर्षिणी ।।३१

---

१. गृहा, २. विषंङ्ग, ३. विशुक्र।

कराङ्गुलिनखोत्पन्ननारायणदशाकृतिः ।
महापाशुपतास्त्राग्निनिर्दग्धासुरसैनिका ॥३२
कामेश्वरास्त्रनिर्दग्धसभण्डासुरशून्यका[1] ।
ब्रह्मोपेन्द्रमहेन्द्रादिदेवसंस्तुतवैभवा ॥३३
हरनेत्राग्निसन्दग्धकामसञ्जीवनौषधिः ।
श्रीमद्वाग्भवकूटैकस्वरूपमुखपङ्कजा ॥३४
कण्ठाधःकटिपर्यन्तमध्यकूटस्वरूपिणी ।
शक्तिकूटैकतापन्नकट्यधोभागधारिणी ॥३५
मूलमन्त्रात्मिका, मूलकूटत्रयकलेवरा ।
कुलामृतैकरसिका कुलसङ्केतपालिनी ॥३६
कुलाङ्गना कुलान्तःस्था, कौलिनी कुलयोगिनी ।
अकुला समयान्तस्था, समयाचारतत्परा ॥३७
मूलाधारैकनिलया, ब्रह्मग्रन्थिविभेदिनी ।
मणिपूरान्तरुदिता, विष्णुग्रन्थिविभेदिनी ॥३८
आज्ञाचक्रान्तरालस्था, रुद्रग्रन्थिविभेदिनी ।
सहस्राराम्बुजारूढा, सुधासाराभिवर्षिणी ॥३९
तटिल्लतासमरुचिः, षट्चक्रोपरि संस्थिता ।
महाऽऽसक्तिः कुण्डलिनी, बिसतन्तुतनीयसी ॥४०
भवानी भावनागम्या, भवारण्यकुठारिका ।
भद्रप्रिया भद्रमूर्तिर्भक्तसौभाग्यदायिनी ॥४१
भक्तप्रिया[2] भक्तिगम्या, भक्तिवश्या भयापहा ।
शाम्भवी शारदाऽऽराध्या, शर्वाणी शर्मदायिनी ॥४२
शाङ्करी श्रीकरी साध्वी, शरच्चन्द्रनिभानना ।
शातोदरी[3] शान्तिमती, निराधारा निरञ्जना ॥४३

---

१. सैनिका २. भक्तिप्रिया, २. शान्तोदरी (कृशोदरी) ।

निर्लेपा निर्मला नित्या, निराकारा निराकुला ।
निर्गुणा निष्कला शान्ता, निष्कामा निरुपप्लवा ।।४४

नित्यमुक्ता निर्विकारा, निष्प्रपञ्चा निराश्रया ।
नित्यशुद्धा नित्यबुद्धा, निरवद्या निरन्तरा ।।४५

निष्कारणा निष्कलङ्का, निरुपाधिर्निरीश्वरा ।
नीरागा रागमथना, निर्मदा मदनाशिनी ।।४६

निश्चिन्ता निरहङ्कारा, निर्मोहा मोहनाशिनी ।
निर्ममा ममताहन्त्री, निष्पापा पापनाशिनी ।।४७

निष्क्रोधा क्रोधशमनी[1], निर्लोभा लोभनाशिनी ।
निःसंशया संशयघ्नी, निर्भवा भवनाशिनी ।।४८

निर्विकल्पा निराबाधा, निर्भेदा भेदनाशिनी ।
निर्नाशा मृत्युमथिनी, निष्क्रिया निष्परिग्रहा ।।४९

निस्तुला नीलचिकुरा, निरपाया निरत्यया ।
दुर्लभा दुर्गमा दुर्गा, दुःखहन्त्री सुखप्रदा ।।५०

दुष्टदूरा दुराचारशमनी दोषवर्जिता ।
सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा, समानाधिकवर्जिता ।।५१

सर्वशक्तिमयी सर्वमङ्गला सद्गतिप्रदा ।
सर्वेश्वरी सर्वमयी, सर्वमन्त्रस्वरूपिणी ।।५२

सर्वयन्त्रात्मिका सर्वतन्त्ररूपा मनोन्मनी ।
माहेश्वरी महादेवी, महालक्ष्मीर्मृडप्रिया ।।५३

महारूपा महापूज्या, महापातकनाशिनी ।
महामाया महासत्त्वा, महाशक्तिर्महारतिः ।।५४

महाभोगा महैश्वर्या, महावीर्या महाबला ।
महाबुद्धिर्महासिद्धिर्महायोगेश्वरेश्वरी ।।५५

---

१. शमिनी ।

महातन्त्रा महामन्त्रा, महायन्त्रा महाऽऽसना ।
महायागक्रमाराध्या, महाभैरवपूजिता ॥५६
महेश्वरमहाकल्पमहाताण्डवसाक्षिणी ।
महाकामेशमहिषी, महात्रिपुरसुन्दरी ॥५७
चतुःषष्ट्युपचाराढ्या, चतुःषष्टिकलामयी ।
महाचतुःषष्टिकोटियोगिनीगणसेविता ॥५८
मनुविद्या चन्द्रविद्या, चन्द्रमण्डलमध्यगा ।
चारुरूपा चारुहासा, चारुचन्द्रकलाधरा ॥५९
चराचरजगन्नाथा, चक्रराजनिकेतना ।
पार्वती पद्मनयना, पद्मरागसमप्रभा ॥६०
पञ्चप्रेतासनासीना, पञ्चब्रह्मस्वरूपिणी ।
चिन्मयी परमानन्दा, विज्ञानघनरूपिणी ॥६१
ध्यानध्यातृध्येयरूपा, धर्माधर्मविवर्जिता ।
विश्वरूपा जागरिणी, स्वपन्ती तैजसात्मिका ॥६२
सुप्ता प्राज्ञात्मिका तुर्या, सर्वावस्थाविवर्जिता ।
सृष्टिकर्त्री ब्रह्मरूपा, गोप्त्री गोविन्दरूपिणी ॥६३
संहारिणी रुद्ररूपा, तिरोधानकरीश्वरी ।
सदाशिवाऽनुग्रहदा, पञ्चकृत्यपरायणा ॥६४
भानुमण्डलमध्यस्था, भैरवी भगमालिनी ।
पद्मासना भगवती, पद्मनाभसहोदरी ॥६५
उन्मेषनिमिषोत्पन्नविपन्नभुवनावली ।
सहस्रशीर्षवदना, सहस्राक्षी सहस्रपात् ॥६६
आब्रह्मकीटजननी, वर्णाश्रमविधायिनी ।
निजाज्ञारूपनिगमा, पुण्यापुण्यफलप्रदा ॥६७

श्रुतिसीमन्तसिन्दूरीकृतपादाब्जधूलिका ।
सकलागमसन्दोहशुक्तिसम्पुटमौक्तिका ॥६८

पुरुषार्थप्रदा पूर्णा, भोगिनी भुवनेश्वरी ।
अम्बिकाऽनादिनिधना, हरिब्रह्मेन्द्रसेविता ॥६९

नारायणी नादरूपा, नामरूपविवर्जिता ।
ह्रीङ्कारी ह्रीमती हृद्या, हेयोपादेयवर्जिता ॥७०

राजराजार्चिता राज्ञी, रम्या राजीवलोचना ।
रञ्जनी रमणी रस्या, रणत् किङ्किणिमेखला ॥७१

रमा राकेन्दुवदना, रतिरूपा रतिप्रिया ।
रक्षाकरी राक्षसघ्नी, रामा रमणलम्पटा ॥७२

काम्या कामकलारूपा, कदम्बकुसुमप्रिया ।
कल्याणी जगतीकन्दा, करुणारससागरा ॥७३

कलावती कलाऽऽलापा, कान्ता कादम्बरीप्रिया ।
वरदा वामनयना, वारुणीमदविह्वला ॥७४

विश्वाधिका वेदवेद्या, विन्ध्याचलनिवासिनी ।
विधात्री वेदजननी, विष्णुमाया विलासिनी ॥७५

क्षेत्रस्वरूपा क्षेत्रेशी, क्षेत्रक्षेत्रज्ञपालिनी ।
क्षयवृद्धिविनिर्मुक्ता, क्षेत्रपालसमर्चिता ॥७६

विजया विमला वन्द्या, वन्दारुजनवत्सला ।
वाग्वादिनी वामकेशी, वह्निमण्डलवासिनी ॥७७

भक्तिमत्कल्पलतिका, पशुपाशविमोचिनी ।
संहृताशेषपाखण्डा, सदाचारप्रवर्तिका ॥७८

तापत्रयाग्निसन्तप्तसमाह्लादनचन्द्रिका ।
तरुणी तापसाराध्या, तनुमध्या तमोऽपहा ॥७९

चितिस्तत्पदलक्ष्यार्था, चिदेकरसरूपिणी ।
स्वात्मानन्दलवीभूतब्रह्माद्यानन्दसन्ततिः ॥८०

परा प्रत्यक्चितीरूपा, पश्यन्ती परदेवता ।
मध्यमा वैखरीरूपा, भक्तमानसहंसिका ।।८१
कामेश्वरप्राणनाडी, कृतज्ञा कामपूजिता ।
शृङ्गाररससम्पूर्णा, जया जालन्धरस्थिता ।।८२
ओड्याणपीठनिलया, बिन्दुमण्डलवासिनी ।
रहोयागक्रमाराध्या, रहस्तर्पणतर्पिता ।।८३
सद्यःप्रसादिनी विश्वसाक्षिणी साक्षिवर्जिता ।
षडङ्गदेवतायुक्ता, षाड्गुण्यपरिपूरिता ।।८४
नित्यक्लिन्ना निरुपमा, निर्वाणसुखदायिनी ।
नित्याषोडशिकारूपा, श्रीकण्ठार्धशरीरिणी ।।८५
प्रभावती प्रभारूपा, प्रसिद्धा परमेश्वरी ।
मूलप्रकृतिरव्यक्ता, व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणी ।।८६
व्यापिनी विविधाकारा, विद्याऽविद्यास्वरूपिणी ।
महाकामेशनयनकुमुदाह्लादकौमुदी ।।८७
भक्तहार्दतमोभेदभानुमद्भानुसन्ततिः ।
शिवदूती शिवाराध्या, शिवमूर्तिः शिवङ्करी ।।८८
शिवप्रिया शिवपरा, शिष्टेष्टा शिष्टपूजिता ।
अप्रमेया स्वप्रकाशा, मनोवाचामगोचरा ।।८९
चिच्छक्तिश्चेतनारूपा, जडशक्तिर्जडात्मिका ।
गायत्री व्याहृतिः सन्ध्या, द्विजवृन्दनिषेविता ।।९०
तत्त्वासना तत्त्वमयी, पञ्चकोशान्तरस्थिता ।
निःसीममहिमा नित्ययौवना मदशालिनी ।।९१
मदघूर्णितरक्ताक्षी, मदपाटलगण्डभूः ।
चन्दनद्रवदिग्धाङ्गा[1], चाम्पेयकुसुमप्रिया ।।९२

१. दिग्धाङ्गी।

कुशला कोमलाकारा, कुरुकुल्ला कुलेश्वरी ।
कुलकुण्डालया, कौलमार्गतत्परसेविता ।।९३
कुमारगणनाथाम्बा, तुष्टिः पुष्टिर्मतिर्धृतिः ।
शान्तिः स्वस्तिमती, कान्तिर्नन्दिनी विघ्ननाशिनी ।।९४
तेजोवती त्रिनयना, लोलाक्षी कामरूपिणी ।
मालिनी हंसिनी माता, मलयाचलवासिनी ।।९५
सुमुखी नलिनी सुभ्रूः, शोभना सुरनायिका ।
कालकण्ठी कान्तिमती, क्षोभिणी सूक्ष्मरूपिणी ।।९६
वज्रेश्वरी वामदेवी, वयोऽवस्थाविवर्जिता ।
सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या, सिद्धमाता यशस्विनी ।।९७
विशुद्धिचक्रनिलयाऽऽरक्तवर्णा[1] त्रिलोचना ।
खट्वाङ्गादिप्रहरणा, वदनैकसमन्विता ।।९८
पायसान्नप्रिया त्वक्स्था, पशुलोकभयङ्करी ।
अमृतादिमहाशक्तिसंवृता डाकिनीश्वरी ।।९९
अनाहताब्जनिलया, श्यामाभा[2] वदनद्वया ।
दंष्ट्रोज्ज्वलाऽक्षमालादिधरा रुधिरसंस्थिता ।।१००
कालरात्र्यादिशक्त्यौघवृता स्निग्धौदनप्रिया ।
महा[3]वीरेन्द्रवरदा, राकिण्यम्बास्वरूपिणी ।।१०१
मणिपूराब्जनिलया, वदनत्रयसंयुता ।
वज्रादिकायुधोपेता, डामर्यादिभिरावृता ।।१०२
रक्तवर्णा मांसनिष्ठा, गुडान्नप्रीतमानसा ।
समस्तभक्तसुखदा, लाकिन्यम्बास्वरूपिणी ।।१०३
स्वाधिष्ठानाम्बुजगता, चतुर्वक्त्रमनोहरा ।
शूलाद्यायुधसम्पन्ना, पीतवर्णाऽतिगर्विता ।।१०४

१. निलयारक्तवर्णा, २. श्यामाभवदनद्वया, ३. मही ।

मेदोनिष्ठा मधुप्रीता, बन्धिन्यादि[1] समन्विता ।
दध्यन्नासक्तहृदया, काकिनीरूपधारिणी ।।१०५
मूलाधाराम्बुजारूढा, पञ्चवक्त्राऽस्थिसंस्थिता ।
अङ्कुशादिप्रहरणा, वरदादिनिषेविता ।।१०६
मुद्गौदनासक्तचित्ता, साकिन्यम्बास्वरूपिणी ।
आज्ञाचक्राब्जनिलया, शुक्लवर्णा षडानना ।।१०७
मज्जासंस्था हंसवती, मुख्यशक्तिसमन्विता ।
हरिद्रान्नैकरसिका, हाकिनीरूपधारिणी ।।१०८
सहस्रदलपद्मस्था, सर्ववर्णोपशोभिता ।
सर्वायुधधरा शुक्लसंस्थिता सर्वतोमुखी ।।१०९
सर्वौदनप्रीत[2] चित्ता, याकिन्यम्बास्वरूपिणी ।
स्वाहा स्वधाऽमतिर्मेधा, श्रुतिः स्मृतिरनुत्तमा ।।११०
पुण्यकीर्तिः पुण्यलभ्या, पुण्यश्रवणकीर्तना ।
पुलोमजाऽर्चिता बन्धमोचिनी[3] बन्धुरालका[4] ।।१११
विमर्शरूपिणी विद्या, वियदादिजगत्प्रसूः ।
सर्वव्याधिप्रशमनी, सर्वमृत्युनिवारिणी ।।११२
अग्रगण्याऽचिन्त्यरूपा, कलिकल्मषनाशिनी ।
कात्यायनी कालहन्त्री, कमलाक्षनिषेविता ।।११३
ताम्बूलपूरितमुखी, दाडिमीकुसुमप्रभा ।
मृगाक्षी मोहिनी मुख्या, मृडानी मित्ररूपिणी ।।११४
नित्यतृप्ता भक्तनिधिर्नियन्त्री निखिलेश्वरी ।
मैत्र्यादिवासनालभ्या, महाप्रलयसाक्षिणी ।।११५

१. बन्दिन्यादि, २. प्रीति, ३. मोचनी, ४. बर्बरालका ।

पराशक्तिः परानिष्ठा, प्रज्ञानघनरूपिणी ।
माध्वीपानालसा मत्ता, मातृकावर्णरूपिणी ।।११६
महाकैलासनिलया, मृणालमृदुदोर्लता ।
महनीया दयामूर्तिर्महासाम्राज्यशालिनी ।।११७
आत्मविद्या महाविद्या, श्रीविद्या कामसेविता ।
श्रीषोडशाक्षरीविद्या, त्रिकूटा कामकोटिका ।।११८
कटाक्षकिङ्करीभूतकमलाकोटिसेविता ।
शिरःस्थिता चन्द्रनिभा, भालस्थेन्द्रधनुष्प्रभा ।।११९
हृदयस्था रविप्रख्या, त्रिकोणान्तरदीपिका ।
दाक्षायणी दैत्यहन्त्री, दक्षयज्ञविनाशिनी ।।१२०
दरान्दोलितदीर्घाक्षी, दरहासोज्ज्वलन्मुखी ।
गुरुमूर्तिर्गुणनिधिर्गोमाता, गुहजन्मभूः ।।१२१
देवेशी दण्डनीतिस्था, दहराकाशरूपिणी ।
प्रतिपन्मुख्यराकान्ततिथिमण्डलपूजिता ।।१२२
कलात्मिका कलानाथा, काव्यालापविमोदिनी ।
सचामररमावाणीसव्यदक्षिणसेविता ।।१२३
आदिशक्तिरमेयाऽऽत्मा, परमा पावनाकृतिः ।
अनेककोटिब्रह्माण्डजननी, दिव्यविग्रहा ।।१२४
क्लीङ्कारी केवला गुह्या, कैवल्यपददायिनी ।
त्रिपुरा त्रिजगद्वन्द्या, त्रिमूर्तिस्त्रिदशेश्वरी ।।१२५
त्र्यक्षरी दिव्यगन्धाढ्या, सिन्दूरतिलकाञ्चिता ।
उमा शैलेन्द्रतनया, गौरी गन्धर्वसेविता ।।१२६
विश्वगर्भा स्वर्णगर्भा, वरदा वागधीश्वरी ।
ध्यानगम्याऽपरिच्छेद्या, ज्ञानदा ज्ञानविग्रहा ।।१२७

सर्ववेदान्तसंवेद्या, सत्यानन्दस्वरूपिणी ।
लोपामुद्रार्चिता लीलाक्लृप्तब्रह्माण्डमण्डला ।।१२८

अदृश्या दृश्यरहिता, विज्ञात्री वेद्यवर्जिता ।
योगिनी योगदा योग्या, योगानन्दा युगन्धरा ।।१२९

इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रियाशक्तिस्वरूपिणी ।
सर्वाधारा सुप्रतिष्ठा, सदसद्रूपधारिणी ।।१३०

अष्टमूर्तिरजाजैत्री, लोकयात्राविधायिनी ।
एकाकिनी भूमरूपा, निर्द्वैता द्वैतवर्जिता ।।१३१

अन्नदा वसुदा वृद्धा, ब्रह्मात्मैक्यस्वरूपिणी ।
बृहती ब्राह्मणी ब्राह्मी, ब्रह्मानन्दा बलिप्रिया ।।१३२

भाषारूपा बृहत्सेना, भावाभावविवर्जिता ।
सुखाराध्या शुभकरी, शोभनासुलभागतिः ।।१३३

राजराजेश्वरी राज्यदायिनी राज्यवल्लभा ।
राजत्कृपा राजपीठनिवेशितनिजाश्रिता ।।१३४

राज्यलक्ष्मीः कोशनाथा, चतुरङ्गबलेश्वरी ।
साम्राज्यदायिनी सत्यसन्धा सागरमेखला ।।१३५

दीक्षिता दैत्यशमनी, सर्वलोकवशङ्करी ।
सर्वार्थदात्री सावित्री, सच्चिदानन्दरूपिणी ।।१३६

देशकालापरिच्छिन्ना, सर्वगा सर्वमोहिनी ।
सरस्वती शास्त्रमयी, गुहाम्बा[२] गुह्यरूपिणी ।।१३७

सर्वोपाधिविनिर्मुक्ता, सदाशिवपतिव्रता ।
सम्प्रदायेश्वरी साध्वी, गुरुमण्डलरूपिणी ।।१३८

---

१ ब्राह्मणी, २. गुह्याम्बा ।

कुलोत्तीर्णा भगाराध्या, माया मधुमती मही ।
गणाम्बा गुह्यकाराध्या, कोमलाङ्गी गुरुप्रिया ।।१३९
स्वतन्त्रा सर्वतन्त्रेशी, दक्षिणामूर्तिरूपिणी ।
सनकादिसमाराध्या, शिवज्ञानप्रदायिनी ।।१४०
चित्कलाऽऽनन्दकलिका, प्रेमरूपा प्रियङ्करी ।
नामपारायणप्रीता, नन्दिविद्या नटेश्वरी ।।१४१
मिथ्याजगदधिष्ठाना, मुक्तिदा मुक्तिरूपिणी ।
लास्यप्रिया लयकरी, लज्जा रम्भादिवन्दिता ।।१४२
भवदावसुधावृष्टिः, पापारण्यदवानला ।
दौर्भाग्यतूलवातूला, जराध्वान्तरविप्रभा ।।१४३
भाग्याब्धिचन्द्रिका भक्तचित्तकेकिघनाघना ।
रोगपर्वतदम्भोलिर्मृत्युदारुकुठारिका ।।१४४
महेश्वरी महाकाली, महाग्रासा महाऽशना ।
अपर्णा चण्डिका चण्डमुण्डासुरनिषूदनी[1] ।।१४५
क्षराक्षरात्मिका सर्वलोकेशी विश्वधारिणी ।
त्रिवर्गदात्री सुभगा, त्र्यम्बका[2] त्रिगुणात्मिका ।।१४६
स्वर्गापवर्गदा शुद्धा, जपापुष्पनिभाऽऽकृतिः ।
ओजोवती द्युतिधरा, यज्ञरूपा प्रियव्रता ।।१४७
दुराराध्या दुराधर्षा, पाटलीकुसुमप्रिया ।
महती मेरुनिलया, मन्दारकुसुमप्रिया ।।१४८
वीराराध्या विराड्रूपा, विरजा विश्वतोमुखी ।
प्रत्यग्रूपा पराकाशा, प्राणदा प्राणरूपिणी ।।१४९
मार्तण्डभैरवाराध्या, मन्त्रिणीन्यस्तराज्यधूः ।
त्रिपुरेशी जयत्सेना, निस्त्रैगुण्या परापरा ।।१५०

१.निषूदिनी, २. त्र्यम्बिका ।

सत्यज्ञानानन्दरूपा, सामरस्यपरायणा ।
कपर्दिनी कलामाला, कामधुक् कामरूपिणी ॥१५१
कलानिधिः काव्यकला, रसज्ञा रसशेवधिः ।
पुष्टा पुरातना पूज्या, पुष्करा पुष्करेक्षणा ॥१५२
परंज्योतिः परंधाम, परमाणुः परात्परा ।
पाशहस्ता पाशहन्त्री, परमन्त्रविभेदिनी ॥१५३
मूर्ताऽमूर्ताऽनित्यतृप्ता, मुनिमानसहंसिका ।
सत्यव्रता सत्यरूपा, सर्वान्तर्यामिणी सती ॥१५४
ब्रह्माणी ब्रह्मजननी, बहुरूपा बुधार्चिता ।
प्रसवित्री प्रचण्डाऽऽज्ञा, प्रतिष्ठा प्रकटाकृतिः ॥१५५
प्राणेश्वरी प्राणदात्री, पञ्चाशत्पीठरूपिणी ।
विश्रृङ्खला विविक्तस्था, वीरमाता वियत्प्रसूः ॥१५६
मुकुन्दा मुक्तिनिलया, मूलविग्रहरूपिणी ।
भावज्ञा भावरोगघ्नी, भवचक्रप्रवर्तिनी ॥१५७
छन्दःसारा शास्त्रसारा, मन्त्रसारा तलोदरी ।
उदारकीर्तिरुद्दामवैभवा वर्णरूपिणी ॥१५८
जन्ममृत्युजरातप्तजनविश्रान्तिदायिनी ।
सर्वोपनिषदुद्घुष्टा, शान्त्यतीता[१]कलात्मिका ॥१५९
गम्भीरा *गगनान्तस्था*, गर्विता गानलोलुपा ।
*कल्पनारहिता काष्ठाऽ*कान्ता कान्तार्धविग्रहा ॥१६०
कार्यकारणनिर्मुक्ता, कामकेलितरङ्गिता ।
कनत्कनकताटङ्का, लीलाविग्रहधारिणी ॥१६१
अजा क्षयविनिर्मुक्ता, मुग्धा क्षिप्रप्रसादिनी ।
अन्तर्मुखसमाराध्या, बहिर्मुखसुदुर्लभा ॥१६२

१.शान्तमतीत, २. सृतिः।

त्रयी त्रिवर्गनिलया, त्रिस्था त्रिपुरमालिनी ।
निरामया निरालम्बा, स्वात्मारामा सुधास्रुतिः[1] ।।१६३
संसारपङ्कनिर्मग्नसमुद्धरणपण्डिता ।
यज्ञप्रिया यज्ञकर्त्री, यजमानस्वरूपिणी ।।१६४
धर्माधारा धनाध्यक्षा, धनधान्यविवर्धिनी ।
विप्रप्रिया विप्ररूपा, विश्वभ्रमणकारिणी ।।१६५
विश्वग्रासा विद्रुमाभा, वैष्णवी विष्णुरूपिणी ।
अयोनिर्योनिनिलया, कूटस्था कुलरूपिणी ।।१६६
वीरगोष्ठीप्रिया वीरा, नैष्कर्म्या नादरूपिणी ।
विज्ञानकलना कल्या, विदग्धा बैन्दवासनी[2] ।।१६७
तत्त्वाधिका तत्त्वमयी, तत्त्वमर्थस्वरूपिणी ।
सामगानप्रिया सौम्या, सदाशिवकुटुम्बिनी ।।१६८
सव्यापसव्यमार्गस्था, सर्वापद्विनिवारिणी ।
स्वस्था स्वभावमधुरा, धीरा धीरसमर्चिता ।।१६९
चैतन्यार्घ्यसमाराध्या, चैतन्यकुसुमप्रिया ।
सदोदिता सदातुष्टा, तरुणादित्यपाटला ।।१७०
दक्षिणाऽदक्षिणाराध्या, दरस्मेरमुखाम्बुजा ।
कौलिनीकेवलाऽनर्घ्यकैवल्यपददायिनी ।।१७१
स्तोत्रप्रिया स्तुतिमती, श्रुतिसंस्तुतवैभवा ।
मनस्विनी मानवती, महेशी मङ्गलाकृतिः ।।१७२
विश्वमाता जगद्धात्री, विशालाक्षी विरागिणी ।
प्रगल्भा परमोदारा, पराऽऽमोदा[3] मनोमयी ।।१७३
व्योमकेशी विमानस्था, वज्रिणी वामकेश्वरी ।
पञ्चयज्ञप्रिया पञ्चप्रेतमञ्चाधिशायिनी ।।१७४

---

१. सुधांसृतिः, २. बैन्दवासना, ३. परमोदा।

पञ्चमी पञ्चभूतेशी, पञ्चसंख्योपचारिणी ।
शाश्वती शाश्वतैश्वर्या, शर्मदा शम्भुमोहिनी ।।१७५
धरा धरसुता धन्या, धर्मिणी धर्मवर्धिनी ।
लोकातीता गुणातीता, सर्वातीता शमात्मिका ।।१७६
बन्धूककुसुमप्रख्या, बाला लीलाविनोदिनी ।
सुमङ्गली सुखकरी, सुवेषाढ्या सुवासिनी ।।१७७
सुवासिन्यर्चनप्रीताऽऽशोभना शुद्धमानसा ।
बिन्दुतर्पणसन्तुष्टा, पूर्वजा त्रिपुराऽम्बिका ।।१७८
दशमुद्रासमाराध्या, त्रिपुराश्रीवशङ्करी ।
ज्ञानमुद्रा ज्ञानगम्या, ज्ञातृज्ञेयस्वरूपिणी ।।१७९
योनिमुद्रा त्रिखण्डेशी, त्रिगुणाम्बा त्रिकोणगा ।
अनघाऽद्भुतचारित्रा, वाञ्छितार्थप्रदायिनी ।।१८०
अभ्यासातिशयज्ञाता, षडध्वातीतरूपिणी ।
अव्याजकरुणामूर्तिरज्ञानध्वान्तदीपिका ।।१८१
आबालगोपविदिता, सर्वानुल्लङ्घ्यशासना ।
श्रीचक्रराजनिलया, श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ।।१८२
श्रीशिवा शिवशक्त्यैक्यरूपिणी ललिताऽम्बिका ।।ॐ

पुनः विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करषडङ्ग-न्यासादि-पूर्वकं ध्यानं कृत्वा मानसपूजनं च कुर्यात् । ततः प्रार्थयेत्—

अनेन श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रपाठेन
श्रीराजराजेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी देवता प्रीयताम् ।

।। ॐ तत् सत् ।।

।। फलश्रुतिः ।।

।। हयग्रीव उवाच ।।

इत्येवं नामसाहस्रं, कथितं ते घटोद्भव !
रहस्यानां रहस्यं च, ललिताप्रीतिदायकम् ।।१
अनेन सदृशं स्तोत्रं, न भूतं न भविष्यति ।
सर्वरोगप्रशमनं, सर्वसम्पत्प्रवर्धनम् ।।२
सर्वापमृत्युशमनं, कालमृत्युनिवारणम् ।
सर्वज्वरार्तिशमनं, दीर्घायुष्यप्रदायकम् ।।३
पुत्रप्रदमपुत्राणां, पुरुषार्थप्रदायकम् ।
इदं विशेषाच्छ्रीदेव्याः, स्तोत्रं प्रीतिविधायकम् ।।४
जपेन्नित्यं प्रयत्नेन, ललितोपास्तितत्परः ।
प्रातः स्नात्वा विधानेन, सन्ध्याकर्म समाप्य च ।।५
पूजागृहं ततो गत्वा, चक्रराजं समर्चयेत् ।
विद्यां जपेत् सहस्रं वा, त्रिशतं शतमेव वा ।।६
रहस्यनामसाहस्रमिदं, पश्चात् पठेन्नरः ।
जन्ममध्ये सकृच्चापि, य एवं[1] पठते सुधीः ।।७
तस्य पुण्यफलं वक्ष्ये, शृणु त्वं कुम्भसम्भव !
गङ्गादिसर्वतीर्थेषु, यः स्नायात् कोटिजन्मसु ।।८
कोटिलिङ्गप्रतिष्ठां तु, यः कुर्यादविमुक्तके ।
कुरुक्षेत्रे च[2] यो दद्यात्, कोटिवारं रविग्रहे ।।९
कोटिं सौवर्णभाराणां[3], श्रोत्रियेषु द्विजन्मसु ।
यः कोटिं हयमेधानामाहरेद् गाङ्गरोधसि ।।१०

१.एतत्, २. तु, ३.सौवर्णभारकम् ; सुवर्णभराणां।

आचरेत् कूपकोटीर्यो, निर्जले मरुभूतले ।
दुर्भिक्षे यः प्रतिदिनं, कोटिब्राह्मणभोजनम् ॥११
श्रद्धया परया कुर्यात्, सहस्रपरिवत्सरान् ।
तत् पुण्यं कोटिगुणितं, लभेत् पुण्यमनुत्तमम् ॥१२
रहस्यनामसाहस्रे, नाम्नोऽप्येकस्य कीर्तनात् ।
रहस्यनामसाहस्रे, नामैकमपि यः पठेत् ॥१३
तस्य पापानि नश्यन्ति, महान्त्यपि न संशयः ।
नित्यकर्माननुष्ठानान्निषिद्धकरणादपि ॥१४
यत् पापं जायते पुंसां, तत् सर्वं नश्यति ध्रुवम्[१] ।
बहुनाऽत्र किमुक्तेन, शृणु त्वं कलशीसुत ! ॥१५
अत्रैकनाम्नो या शक्तिः, पातकानां निवर्तने ।
तन्निवर्त्यमघं कर्तुं, नालं लोकाश्चतुर्दश ॥१६
यस्त्यक्त्वा नामसाहस्रं, पापहानिमभीप्सति ।
स हि शीतनिवृत्त्यर्थं, हिमशैलं निषेवते ॥१७
भक्तो यः कीर्तयेन्नित्यमिदं नामसहस्रकम् ।
तस्मै श्रीललिता देवी, प्रीताऽभीष्टं प्रयच्छति ॥१८
अकीर्तयन्निदं स्तोत्रं, कथं भक्तो भविष्यति ?
नित्यं सङ्कीर्तनाशक्तः, कीर्तयेत् पुण्यवासरे ।
संक्रान्तौ विषुवे चैव, स्वजन्मत्रितयेऽयने ॥१९
नवम्यां वा चतुर्दश्यां, सितायां शुक्रवासरे ।
कीर्तयेन्नामसाहस्रं, पौर्णमास्यां विशेषतः ॥२०
पौर्णमास्यां चन्द्रबिम्बे, ध्यात्वा श्रीललिताम्बिकाम् ।
पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, पठेन्नामसहस्रकम् ॥२१

---

१. द्रुतम्।

सर्वे[1] रोगाः प्रणश्यन्ति, दीर्घायुष्यं च विन्दति ।
अयमायुष्करो नाम, प्रयोगः कल्पनोदितः ।।२२
ज्वरार्तं[3] शिरसि स्पृष्ट्वा, पठेन्नामसहस्रकम् ।
तत्क्षणात् प्रशमं याति, शिरस्तोदो ज्वरोऽपि च ।।२३
सर्वव्याधिनिवृत्त्यर्थं[4], स्पृष्ट्वा भस्म जपेदिदम्[5] ।
तद्भस्मधारणादेव, नश्यन्ति व्याधयो क्षणात् ।।२४
जलं सम्मन्त्र्य कुम्भस्थं, नामसाहस्रतो मुने !
अभिषिञ्चेद् ग्रहग्रस्तान्, ग्रहा नश्यन्ति तत्क्षणात् ।।२५
सुधासागरमध्यस्थां, ध्यात्वा श्रीललिताऽम्बिकाम् ।
यः पठेन्नामसाहस्रं, विषं तस्य विनश्यति ।।२६
वन्ध्यानां पुत्रलाभाय, नामसाहस्रमन्त्रितम् ।
नवनीतं प्रदद्यात्तु, पुत्रलाभो भवेद् ध्रुवम् ।।२७
देव्याः पाशेन सम्बद्धामाकृष्टामङ्कुशेन च ।
ध्यात्वाऽभीष्टां स्त्रियं रात्रौ, पठेन्नाम[6]सहस्रकम् ।।२८
आयाति स्वसमीपं सा, यद्यप्यन्तः पुरं गता ।
राजाऽऽकर्षणकामश्चेद्, राजाऽवसथदिङ्मुखः ।।२९
त्रिरात्रं यः पठेदेतच्छ्रीदेवीध्यानतत्परः ।
स राजा पारवश्येन, मातङ्गं[7] वा मतङ्गजम् ।।३०
आरुह्याऽऽयाति निकटं, दासवत् प्रणिपत्य च ।
तस्मै राज्यं च कोशं च, दद्यादेव[8] वशं गतः ।।३१
रहस्यनामसाहस्रं, यः कीर्तयति नित्यशः ।
तन्मुखालोकमात्रेण, मुह्येल्लोकत्रयं मुने ! ।।३२
यस्त्विदं नामसाहस्रं, सकृत् पठति भक्तिमान् ।
तस्य ये शत्रवस्तेषां, निहन्ता शरभेश्वरः ।।३३

१. सर्वे, २. कल्प-चोदितः, ३. ज्वरार्थं, ४. निवृत्त्यर्थे, ५. पठेदिदम्, ६. जपेन्नाम-सहस्रकम्, ७. तुरङ्गं, ८. ददात्येव।

यो वाऽभिचारं कुरुते, नामसाहस्रपाठके ।
निवर्त्य तत्क्रियां हन्यात्, तं वै प्रत्यङ्गिरा स्वयम् ।।३४
ये क्रूरदृष्ट्या वीक्ष्यन्ते, नामसाहस्रपाठकम् ।
तानन्धान् कुरुते क्षिप्रं, स्वयं मार्तण्डभैरवः ।।३५
धनं यो हरते चोरैर्नाम[१]साहस्रजापिनः ।
यत्र कुत्र स्थितं वापि, क्षेत्रपालो निहन्ति तम् ।।३६
विद्यासु कुरुते वादं, यो विद्वान् नामजापिनः ।
तस्य वाक्स्तम्भनं सद्यः, करोति नकुलीश्वरी ।।३७
यो राजा कुरुते वैरं, नामसाहस्रजापिनः[२] ।
चतुरङ्ग-बलं तस्य, दण्डिनी संहरेत् स्वयम् ।।३८
यः पठेन्नामसाहस्रं, षण्मासं भक्तिसंयुतः ।
लक्ष्मीश्चाञ्चल्यरहिता, सदा तिष्ठति तद्गृहे ।।३९
मासमेकं प्रतिदिनं, त्रिवारं यः पठेन्नरः ।
भारती तस्य जिह्वाग्रे, रङ्गे नृत्यति नित्यशः ।।४०
यस्त्वेकवारं पठति, पक्षमेकमतन्द्रितः[३] ।
मुह्यन्ति कामवशगा, मृगाक्ष्यस्तस्य वीक्षणात् ।।४१
यः पठेन्नामसाहस्रं, जन्ममध्ये सकृन्नरः ।
तद्दृष्टिगोचराः सर्वे, मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः ।।४२
यो वेत्ति नामसाहस्रं, तस्मै देयं द्विजन्मने ।
अन्नं वस्त्रं धनं धान्यं, नान्येभ्यस्तु कदाचन ।।४३
श्रीमन्त्रराजं यो वेत्ति, श्रीचक्रं यः समर्चति ।
यः कीर्तयति नामानि, तं सत्पात्रं विदुर्बुधाः ।।४४
तस्मै देयं प्रयत्नेन, श्रीदेवीप्रीतिमिच्छता ।।४५

---

१. चोरी नाम, २. जापिना, ३. पक्ष-मात्रमतन्द्रितः ।

न कीर्तयति नामानि, मन्त्रराजं न वेत्ति यः ।
पशुतुल्यः स विज्ञेयस्तस्मै दत्तं निरर्थकम् ।।४६
परीक्ष्य विद्याविदुषस्तेभ्यो[1] दद्याद् विचक्षणः ।।४७
श्रीमन्त्रराजसदृशो, यथा मन्त्रो न विद्यते ।
देवता ललितातुल्या, यथा नास्ति घटोद्भव !
रहस्यनामसाहस्रतुल्या, नास्ति तथा स्तुतिः ।।४८
लिखित्वा पुस्तके यस्तु, नामसाहस्रमुत्तमम् ।
समर्चयेत् सदा भक्त्या, तस्य तुष्यति सुन्दरी ।।४९
बहुनाऽत्र किमुक्तेन, शृणु त्वं कुम्भसम्भव! ।
नानेन सदृशं स्तोत्रं, सर्वतन्त्रेषु विद्यते[2] ।।५०
तस्मादुपासको नित्यं, कीर्तयेदिदमादरात् ।
एभिर्नामसहस्रैस्तु, श्रीचक्रं योऽर्चयेत् सकृत् ।।५१
पद्मैर्वा तुलसीपुष्पैः, कह्लारैर्वा कदम्बकैः ।
चम्पकैर्जातिकुसुमैर्मल्लिकाकरवीरकैः ।।५२
उत्पलैर्बिल्वपत्रैर्वा, कुन्दकेसरपाटलैः ।
अन्यैः सुगन्धिकुसुमैः, केतकीमाधवीमुखैः ।।५३
तस्य पुण्यफलं वक्तुं, न शक्नोनोति महेश्वरः ।।५४
सा वेत्ति ललितादेवी, स्वचक्रार्चनजं फलम् ।
अन्ये कथं विजानीयुर्ब्रह्माद्याः स्वल्पमेधसः? ।।५५
प्रतिमासं पौर्णमास्यामेभिर्नामसहस्रकैः ।
रात्रौ यश्चक्रराजस्थामर्चयेत् परदेवताम् ।।५६
स एव ललितारूपस्तद्रूपा ललिता स्वयम् ।
न तयोर्विद्यते भेदो, भेदकृत् पापकृद् भवेत् ।।५७
महानवम्यां यो भक्तः, श्रीदेवीं चक्रमध्यगाम् ।
अर्चयेन्नामसाहस्रैस्तस्य, मुक्तिः करे स्थिता ।।५८

१. विद्याविषये तेभ्यो, २. दृश्यते।

यस्तु नामसाहस्रेण, शुक्रवारे समर्चयेत् ।
चक्रराजे महादेवीं, तस्य पुण्यफलं शृणु ।।५९
सर्वान् कामानवाप्येह, सर्वसौभाग्यसंयुतः ।
पुत्रपौत्रादिसंयुक्तो, भुक्त्वा भोगान् यथेप्सितान् ।।६०
अन्ते श्रीललितादेव्याः, सायुज्यमतिदुर्लभम् ।
प्रार्थनीयं शिवाद्यैश्च, प्राप्नोत्येव न संशयः ।।६१
यः सहस्रं ब्राह्मणानामेभिर्नामसहस्रकैः ।
समर्च्य भोजयेद् भक्त्या, पायसापूपषड्रसैः ।।६२
तस्मै प्रीणाति ललिता, स्वसाम्राज्यं प्रयच्छति ।
न तस्य दुर्लभं वस्तु, त्रिषु लोकेषु विद्यते ।।६३
निष्कामः कीर्तयेद् यस्तु, नामसाहस्रमुत्तमम् ।
ब्रह्मज्ञानमवाप्नोति,. येन मुच्येत बन्धनात् ।।६४
धनार्थी धनमाप्नोति, यशोऽर्थी चाप्नुयाद् यशः ।
विद्यार्थी चाप्नुयाद् विद्यां, नामसाहस्रकीर्तनात् ।।६५
नानेन सदृशं स्तोत्रं, भोगमोक्षप्रदं मुने !
कीर्तनीयमिदं तस्माद्, भोगमोक्षार्थिभिर्नरैः ।।६६
चतुराश्रमनिष्ठैश्च, कीर्तनीयमिदं सदा ।
स्वधर्मसमनुष्ठानवैकल्यपरिपूर्तये ।।६७
कलौ पापैकबहुले, धर्मानुष्ठानवर्जिते ।
नामानुकीर्तनं मुक्त्वा, नृणां नान्यत् परायणम् ।।६८
लौकिकाद् वचनान्मुख्यं, विष्णुनामानुकीर्तनम् ।
विष्णुनामसहस्राच्च, शिवनामैकमुत्तमम् ।।६९
देवीनामसहस्राणि, कोटिशः सन्ति कुम्भज !
तेषु मुख्यं दशविधं, नामसाहस्रमुच्यते ।।७०

रहस्यनामसाहस्रमिदं, शस्तं दशस्वपि ।
तस्मात् सङ्कीर्तयेन्नित्यं, कलिदोषनिवृत्तये ।।७१
मुख्यं श्रीमातृनामेति, न जानन्ति विमोहिताः ।।७२
विष्णुनामपराः केचिच्छिवनामपराः परे ।
न कश्चिदपि लोकेषु, ललितानामतत्परः ।।७३
येनान्यदेवतानाम, कीर्तितं जन्मकोटिषु ।
तस्यैव भवति श्रद्धा, श्रीदेवीनामकीर्तने ।।७४
चरमे जन्मनि यथा, श्रीविद्योपासको भवेत् ।
नामसाहस्रपाठश्च, तथा चरमजन्मनि ।।७५
यथैव विरला लोके, श्रीविद्याऽऽचारवेदिनः ।
तथैव विरलो[1] गुह्यनामसाहस्रपाठकः[2] ।।७६
मन्त्रराजजपश्चैव, चक्रराजार्चनं तथा ।
रहस्यनामपाठश्च, नाल्पस्य तपसः फलम् ।।७७
अपठन् नामसाहस्रं, प्रीणयेद् यो महेश्वरीम् ।
स चक्षुषा विना रूपं, पश्येदेव नरो परे[3] ।।७८
रहस्यनामसाहस्रं, त्यक्त्वा यः सिद्धिकामुकः ।
स भोजनं विना नूनं, क्षुन्निवृत्तिमभीप्सति ।।७९
यो भक्तो ललितादेव्याः, स नित्यं कीर्तयेदिदम् ।
नान्यथा प्रीयते देवी, कल्पकोटिशतैरपि ।।८०
तस्माद् रहस्यनामानि, श्रीमातुः प्रयतः पठेत् ।
इति ते कथितं स्तोत्रं, रहस्यं कुम्भसम्भव ! ।।८१
नाविद्यावेदिने ब्रूयान्नाभक्ताय कदाचन ।
यथैव गोप्या श्रीविद्या, तथा गोप्यमिदं मुने ! ।।८२

१. बिरला, २. पाठकाः, ३. पश्यत्येव विमूढधीः।

पशुतुल्येषु न ब्रूयाज्जनेषु स्तोत्रमुत्तमम् ।
यो ददाति अनिवेद्यो[1], श्रीविद्यारहिताय तु[2] ।।८३
तस्मै कुप्यन्ति योगिन्यः, सोऽनर्थः सुमहान् स्मृतः ।
रहस्यनामसाहस्रं, तस्मात् सङ्गोपयेदिदम् ।।८४
स्वतन्त्रेण मया नोक्तं, तवापि कलशोद्भव[3] !
ललिताप्रेरणादेव[4], मयोक्तं स्तोत्रमुत्तमम् ।।८५
कीर्तनीयमिदं भक्त्या, कुम्भयोने ! निरन्तरम् ।
तेन तुष्टा महादेवी, तवाभीष्टं प्रदास्यति ।।८६

।। श्रीसूत उवाच ।।

इत्युक्त्वा श्रीहयग्रीवो, ध्यात्वा श्रीललिताऽम्बिकाम् ।
आनन्दमग्नहृदयः, सद्यः पुलकितोऽभवत् ।।८७

।। श्रीब्रह्माण्डपुराणे ललितोपाख्याने हयग्रीवागस्त्यसंवादे
श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रसम्पूर्णम् ।।

---

१. विमूढात्मा, २. च, ३. कलशीसुत!, ४. प्रेरणेनैव ।

४. श्रीललिताम्बात्रिशतीस्तवः

(पूर्वपीठिका)

।। श्रीअगस्त्य उवाच ।।

हयग्रीव ! दयासिन्धो !, भगवन् ! भक्तवत्सल !।
त्वत्तः श्रुतमशेषेण, श्रोतव्यं यद्यदस्ति तत् ।।१
रहस्यनामसाहस्रमपि त्वत्तः श्रुतं मया ।
इतः परं च मे नास्ति, श्रोतव्यमिति निश्चयः ।।२
तथापि मम चित्तस्य, पर्याप्तिर्नैव जायते ।
कार्तार्थ्यमप्राप्त इव, शोचत्यात्माऽपि मे प्रभो ! ।।३
किमिदं कारणं ब्रूहि, ज्ञातव्यांशोऽस्ति वा पुनः ।
अस्ति चेन्मामनुब्रूहि, ब्रूहीत्युक्त्वा प्रणम्य तम् ।।४

।। श्रीसूत उवाच ।।

समाललम्बे तत्पादयुगलं कलशोद्भवः ।
हयाननोऽपि भीतः सन्, किमिदं किमिदं मुने ! ।।५
मुञ्च मुञ्चेति तं चोक्त्वा, चिन्ताऽऽक्रान्तो बभूव सः।
चिरं विचार्य निश्चिन्वन्, वक्तव्यं न मयेत्यसौ ।।६
तूष्णीं स्थितः स्मरन्नाज्ञां, ललिताम्बाकृतां पुरा ।
प्रणमन्नेव स मुनिस्तत्पादावत्यजन् स्थितः ।।७
वर्षत्रयमुपासीनौ, गुरुशिष्यौ तथा स्थितौ ।
शृण्वन्तस्तौ च पश्यन्तः,सर्वे लोकास्तु विस्मिताः।।८
ततः श्रीललिता देवी, कामेश्वरसमन्विता ।
प्रादुर्भूय हयग्रीवं, रहस्येवमवोचत ।।९

।। श्रीदेवीललिता उवाच।।

अश्वाननाऽऽवयोः प्रीतिः, शास्त्रविश्वासतस्त्वयि[1] ।
राज्यं देयं शिरो देयं, न देया षोडशाक्षरी ।।१०

पाठान्तर : १. विश्वासिनि! त्वयि।

स्वमातृयोनिवद् गोप्या, विद्यैषेत्यागमा जगुः ।
ततोऽपि गोपनीया मे, सर्वपूर्तिकरी स्तुतिः ।।११
मया कामेश्वरेणाऽपि, कृता सा गोपिता[1] भृशम् ।
मदाज्ञया वचो देव्यश्चक्रुर्नामसहस्रकम् ।।१२
आवाभ्यां कथिता मुख्या[2], सर्वपूर्तिकरी स्तुतिः[3] ।
सर्वक्रियाणं वैकल्ये[4], पूर्तिर्यज्जपतो भवेत् ।।१३
सर्वपूर्तिकरं तस्मादिति नाम कृतं मया ।
तद् ब्रूहि त्वमगस्त्याय, पात्रमेष न संशयः ।।१४
पत्न्यस्य लोपामुद्राख्या, मामुपास्तेऽतिभक्तितः ।
अयं च नितरां भक्तस्तस्मादस्य वदस्व तत् ।।१५
अमुञ्चमानस्त्वत्पादौ, वर्षत्रयमसौ स्थितः ।
एतज्ज्ञातुमतो भक्तेरिदमेव निदर्शनम् ।।१६
चित्तपर्याप्तिरेतस्य, नान्यथा सम्भविष्यति ।
सर्वपूर्तिकरं तस्मादनुज्ञातो मया वद ।।१७

।। श्रीसूत उवाच ।।

इत्युक्त्वाऽन्तर्दधावम्बा, कामेश्वरसमन्विता ।
अथोत्थाय हयग्रीवः, पाणिभ्यां कुम्भसम्भवम् ।
संस्थाप्य निकटे वाचमुवाच भृशं विस्मितः ।।१८

।।श्रीहयग्रीव उवाच।।

कृतार्थोऽसि कृतार्थोऽसि, कृतार्थोऽसि घटोद्भव !
त्वत्समो ललिताभक्तो, नास्ति नास्ति जगत्त्रये ।।१९
येनागत्य स्वयं देवी, तव वक्तव्यमन्वशात् ।।२०
सच्छिष्येण त्वयाऽहं च, दृष्टवानस्मि तां शिवाम् ।
यतन्ते यद्दर्शनार्था, ब्रह्मविष्ण्वीशपूर्वकाः ।।२१

१. सङ्गोपिता, २. कथितो मुख्यः, ३. पूर्तिकरः स्तवः, ४. वैकल्य।

अतः परं ते वक्ष्यामि, सर्वपूर्तिकरं स्तवम् ।
यस्य स्मरणमात्रेण, पर्याप्तिस्ते भवेद् हृदि ।।२२
रहस्यनामसाहस्त्रादपि गुह्यमिदं मुने !
आवश्यक ततोऽप्येतल्ललितां समुपासताम् ।।२३
तदहं ते प्रवक्ष्यामि, ललिताम्बाऽनुशासनात् ।
श्रीमत्पञ्चदशाक्षर्याः, कादिवर्णक्रमान्मुने ! ।।२४
पृथग्विंशतिनामानि, कथितानि घटोद्भव !
आहृत्य नाम्नां त्रिशती, सर्वसम्पूर्तिकारिणी ।।२५
रहस्याऽतिरहस्यैषा, गोपनीया प्रयत्नतः ।
तां शृणुष्व महाभाग ! सावधानेन चेतसा ।।२६
केवलं नामबुद्धिस्ते, न कार्या तेषु कुम्भज !
मन्त्रात्मकत्वमेतेषां, नाम्नां नामात्मताऽपि च ।।२७
तस्मादेकाग्रमनसा, श्रोतव्यं भवतः सदा ।

।। श्रीसूत उवाच ।।

इत्युक्त्वा तं हयग्रीवो, प्रोचे नाम्नां शतत्रयीम् ।।२८

।। मूलपाठः ।।

ॐ अस्य श्रीललिताम्बात्रिशतीनाममालामन्त्रस्य भगवान् हयग्रीव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीललितामहाभट्टारिका देवता, ऐं बीजम्, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीललितामहाभट्टारिकाप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

।। ऋष्यादिन्यासः ।।

भगवान्हयग्रीवऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्रीललितामहाभट्टारिकादेवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। सौः शक्तये नमः नाभौ। क्लीं कीलकाय नमः पादयोः। श्रीललितामहाभट्टारिकाप्रीतये पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

।। षडङ्गन्यासः ।।

		करन्यासः	अङ्गन्यासः
ऐं	क-५	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं	ह-६	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः	स-४	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं	क-५	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
क्लीं	ह-६	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
सौः	स-४	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ॐअतिमधुरचापहस्तामपरिमिताऽऽमोदबाणसौभाग्याम्।
अरुणामतिशयकरुणामभिनवकुलसुन्दरीं वन्दे ।।१

ॐ पाशांकुशेक्षुसुमराजितपञ्चशाखाम्,
पाटल्यशालिसुषुमाञ्चितगात्रवल्लीम् ।
प्राचीनवाक्स्तुतपदां परदेवतां त्वाम्,
पञ्चायुधार्चितपदां, प्रणमामि देवीम् ।।२

।। मानसपूजनम् ।।

लं पृथ्वीतत्त्वात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वरशिवसहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै समर्पयामि नमः—अधोमुख कनिष्ठा-अंगुष्ठ से। हं आकाशतत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वर-शिवसहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै समर्पयामि नमः—अधोमुख तर्जनी-अंगुष्ठ से। यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वरशिवसहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै समर्पयामि नमः—ऊर्ध्व-मुख तर्जनी-अंगुष्ठ से। रं वह्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीकामेश्वरशिवसहितायै श्रीललितामहा-त्रिपुरसुन्दरीदेवतायै समर्पयामि नमः—ऊर्ध्व-मुख मध्यमा-

अंगुष्ठ से। **वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वरशिवसहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै सर्मयामि नमः**—ऊर्ध्वमुख अनामिका-अंगुष्ठ से। **सं सर्वतत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वर-शिवसहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै समर्पयामि नमः**—ऊर्ध्वमुख सर्वांगुलि से।

।। त्रिशतीस्तवः ।।

'क'काररूपा कल्याणी, कल्याणगुणशालिनी ।
कल्याणशैलनिलया, कमनीया कलावती ।।१
कमलाक्षी कल्मषघ्नी, करुणामृतसागरा ।
कदम्बकाननावासा, कदम्बकुसुमप्रिया ।।२
कन्दर्पविद्या कन्दर्पजनकापाङ्गवीक्षणा ।
कर्पूरवीटीसौरभ्यकल्लोलितककुत्परा[1] ।।३
कलिदोषहरा कञ्जलोचना कम्रविग्रहा ।
कर्मादिसाक्षिणी कारयित्री कर्मफलप्रदा ।।४
'ए'काररूपा चैकाक्षर्येकाऽनेकाक्षराकृतिः[2] ।
एतत्तदित्यनिर्देश्या, चैकानन्दचिदाकृतिः ।।५
एवमित्यागमाबोध्या, चैकभक्तिमदर्चिता ।
एकाग्रचित्तनिर्ध्याता, चैषणारहितादृता ।।६
एलासुगन्धिचिकुरा, चैनःकूटविनाशिनी ।
एकभोगा चैकरसा, चैकैश्वर्यप्रदायिनी ।।७
एकातपत्रसाम्राज्यप्रदा चैकान्तपूजिता ।
एधमानप्रभा चैजदनेकजगदीश्वरी ।।८

---

१. ककुप्तटा, २. चैकाक्षीएकानेकाक्षराकृतिः।

एकवीरादिसंसेव्या, चैकप्राभवशालिनी ।
'ई' काररूपा[1] चेशित्री[2], चेप्सितार्थप्रदायिनी ।।९
ईदृगित्यविनिर्देश्या, चेश्वरत्वविधायिनी[3] ।
ईशानादिब्रह्ममयी, चेशित्वाद्यष्टसिद्धिदा ।।१०
ईक्षित्रीक्षणसृष्टाण्डकोटिरीश्वरवल्लभा ।
ईडिता चेश्वरार्द्धाङ्गशरीरेशाधिदेवता ।।११
ईश्वरप्रेरणकरी, चेशताण्डवसाक्षिणी ।
ईश्वरोत्सङ्गनिलया, चेतिबाधाविनाशिनी ।।१२
ईहाविरहिता चेशशक्तिरीषत्स्मितानना ।
'ल'काररूपा ललिता, लक्ष्मीवाणीनिषेविता ।।१३
लाकिनी ललनारूपा, लसद्दाडिमपाटला ।
ललन्तिकालसत्फाला[4], ललाटनयनार्चिता ।।१४
लक्षणोज्ज्वलदिव्याङ्गी[5], लक्षकोट्यण्डनायिका ।
लक्ष्यार्था लक्षणागम्या, लब्धकामा लतातनुः ।।१५
ललामराजदलिका, लम्बिमुक्तालताञ्चिता ।
लम्बोदरप्रसूर्लभ्या, लज्जाढ्या लयवर्जिता ।।१६
ह्रीङ्काररूपा ह्रीङ्कारनिलया ह्रींपदप्रिया ।
ह्रीङ्कारबीजा ह्रीङ्कारमन्त्रा ह्रीङ्कारलक्षणा ।।१७
ह्रीङ्कारजपसुप्रीता, ह्रींमती ह्रींविभूषणा ।
ह्रींशीला ह्रींपदाराध्या, ह्रींगर्भा ह्रींपदाभिधा ।।१८
ह्रीङ्कारवाच्या ह्रीङ्कारपूज्या ह्रीङ्कारपीठिका ।
ह्रीङ्कारवेद्या ह्रीङ्कारचिन्त्या ह्रीं ह्रींशरीरिणी ।।१९

१. ईकाररूपिणी, २. शित्री, ३. प्रदायिनी, ४. भाला. ५.सर्वाङ्गी।

'ह'काररूपा हलधृक्पूजिता हरिणेक्षणा ।
हरिप्रिया हराराध्या, हरिब्रह्मेन्द्रवन्दिता ।।२०
हयारूढासेविताङ्घ्रिर्हयमेधसमर्चिता ।
हर्यक्षवाहना हंसवाहना हतदानवा ।।२१
हत्यादिपापशमनी, हरिदश्वादिसेविता ।
हस्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचा, हस्तिकृत्तिप्रियाङ्गना ।।२२
हरिद्राकुंकुमादिग्धा, हर्यश्वाद्यमरार्चिता ।
हरिकेशसखी हादिविद्या हाला मदोल्लसा[1] ।।२३
'स'काररूपा सर्वज्ञा, सर्वेशी सर्वमङ्गला ।
सर्वकर्त्री सर्वभर्त्री, सर्वहन्त्री[2] सनातना[3] ।।२४
सर्वानवद्या सर्वाङ्गसुन्दरी सर्वसाक्षिणी ।
सर्वात्मिका सर्वसौख्यदात्री सर्वविमोहिनी ।।२५
सर्वाधारा सर्वगता, सर्वावगुणवर्जिता[4] ।
सर्वारुणा सर्वमाता, सर्वभूषणभूषिता[5] ।।२६
'क'कारार्था कालहन्त्री, कामेशी कामितार्थदा ।
कामसञ्जीवनी कल्या, कठिनस्तनमण्डला ।।२७
करभोरुः कलानाथमुखी कचजिताम्बुदा ।
कटाक्षस्यन्दिकरुणा, कपालिप्राणनायिका ।।२८
कारुण्यविग्रहा कान्ता, कान्तिधूतजपावलिः ।
कलाऽऽलापा कम्बुकण्ठी, करनिर्जितपल्लवा ।।२९
कल्पवल्लीसमभुजा, कस्तूरीतिलकाञ्चिता[6] ।
'ह'कारार्था हंसगतिर्हाटकाऽऽभरणोज्ज्वला ।।३०

---

१. मदालसा, २. सर्वहर्त्री, ३. सनातनी, ४. सर्वापगुणवर्जिता, ५.सर्वाभरणभूषिता, ६.तिलकोज्ज्वला।

हारहारिकुचाभोगा, हाकिनी हल्यवर्जिता ।
हरित्पतिसमाराध्या, हठात्कारहताऽसुरा ।।३१
हर्षप्रदा हविर्भोक्त्री, हार्दसन्तमसापहा ।
हल्लीसलास्यसन्तुष्टा, हंसमन्त्रार्थरूपिणी ।।३२
हानोपादाननिर्मुक्ता; हर्षिणी हरिसोदरी ।
हाहाहूहूमुखस्तुत्या, हानिवृद्धिविवर्जिता ।।३३
हय्यङ्गवीनहृदया, हरिगोपारुणांशुका ।
'ल'काराख्या लतापूज्या, लयस्थित्युद्भवेश्वरी ।।३४
लास्यदर्शनसन्तुष्टा, लाभालाभविवर्जिता ।
लङ्घ्येतराज्ञालावण्यशालिनी लघुसिद्धिदा ।।३५
लाक्षारससवर्णाभा[1], लक्ष्मणाग्रजपूजिता ।
लभ्येतरा लभ्य[2]भक्तिसुलभा लाङ्गलायुधा ।।३६
लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरिवीजिता ।
लज्जापदसमाराध्या, लम्पटा लकुलेश्वरी[3] ।।३७
लब्धमाना लब्धरसा, लब्धसम्पत्समुन्नतिः ।
ह्रीङ्कारिणी च ह्रीमाद्या, ह्रींमध्या ह्रींशिखामणिः ।।३८
ह्रीङ्कारकुण्डाग्निशिखा, ह्रींङ्कारशशिचन्द्रिका ।
ह्रीङ्कारभास्कररुचिर्ह्रीङ्काराम्भोदचञ्चला ।।३९
ह्रीङ्कारकन्दाङ्कुरिका, ह्रीङ्कारैकपरायणा ।
ह्रीङ्कारदीर्घिकाहंसी, ह्रीङ्कारोद्यानकेकिनी ।।४०
ह्रीङ्कारारण्यहरिणी, ह्रीङ्काराबालवल्लरी ।
ह्रीङ्कारपञ्जरशुकी, ह्रीङ्काराङ्गणदीपिका ।।४१
ह्रीङ्कारकन्दरासिंही, ह्रीङ्काराम्बुजभृङ्गिका[4] ।
ह्रीङ्कारसुमनोमाध्वी, ह्रीङ्कारतरुमञ्जरी ।।४२

१. सुवर्णाभा, २. लब्ध, ३. लकुलीश्वरी, ४. ह्रीङ्काराम्भोज ।

'स' काराख्या समरसा, सकलागमसंस्तुता ।
सर्ववेदान्ततात्पर्यभूमिः सदसदाश्रया ।।४३
सकला सच्चिदानन्दा, साध्या[1] सद्गतिदायिनी ।
सनकादिमुनिध्येया, सदाशिवकुटुम्बिनी ।।४४
सकलाधिष्ठानरूपा, सत्यरूपा समाकृतिः ।
सर्वप्रपञ्चनिर्मात्री, समानाधिकवर्जिता ।।४५
सर्वोत्तुङ्गा सङ्गहीना, सगुणा सकलेश्वरी[2] ।
'क' कारिणी काव्यलोला, कामेश्वरमनोहरा ।।४६
कामेश्वरप्राणनाडी, कामेशोत्सङ्गवासिनी ।
कामेश्वरालिङ्गिताङ्गी, कामेश्वरसुखप्रदा ।।४७
कामेश्वरप्रणयिनी, कामेश्वरविलासिनी ।
कामेश्वरतपःसिद्धिः, कामेश्वरमनःप्रिया ।।४८
कामेश्वरप्राणनाथा, कामेश्वरविमोहिनी ।
कामेश्वरब्रह्मविद्या, कामेश्वरगृहेश्वरी ।।४९
कामेश्वराह्लादकरी, कामेश्वरमहेश्वरी ।
कामेश्वरी कामकोटिनिलया कांक्षितार्थदा ।।५०
'ल'कारिणी लब्धरूपा, लब्धधीर्लब्धवाञ्छिता ।
लब्धपापमनोदूरा, लब्धाऽहङ्कारदुर्गमा ।।५१
लब्धशक्तिर्लब्धदेहा, लब्धैश्वर्यसमुन्नतिः ।
लब्धवृद्धिर्लब्धलीला, लब्धयौवनशालिनी ।।५२
लब्धातिशयसर्वाङ्गसौन्दर्या लब्धविभ्रमा ।
लब्धरागा लब्धपतिर्लब्धनानागमस्थितिः ।।५३
लब्धभोगा लब्धसुखा, लब्धहर्षाभिपूजिता[3] ।
'ह्रीं'ङ्कारमूर्तिर्ह्रीङ्कारसौधशृङ्गकपोतिका ।।५४

१. साध्वी, २. सद्गुणा सकलेष्टदा, ३ पूरिता ।

ह्रीङ्कारदुग्धाब्धिसुधा, ह्रीङ्कारकमलेन्दिरा ।
ह्रीङ्कारमणिदीपार्चिर्ह्रीङ्कारतरुशारिका ।।५५
ह्रीङ्कारपेटकमणिर्ह्रीङ्कारादर्शबिम्बिता ।
ह्रीङ्कारकोशासिलता, ह्रीङ्कारस्थाननर्त्तकी[१] ।।५६
ह्रीङ्कारशुक्तिकामुक्तामणिर्ह्रीङ्कारबोधिता ।
ह्रीङ्कारमय[२]सौवर्णस्तम्भविद्रुमपुत्रिका ।।५७
ह्रीङ्कारवेदोपनिषद् ह्रीङ्काराध्वरदक्षिणा ।
ह्रीङ्कारनन्दनारामनवकल्पकवल्लरी[३] ।।५८
ह्रीङ्कारहिमवद्गङ्गा, ह्रीङ्कारार्णवकौस्तुभा ।
ह्रीङ्कारमन्त्रसर्वस्वा, ह्रीङ्कारपरसौख्यदा ।।५९

फलश्रुतिः

इत्येतत् ते समाख्यातं, दिव्यं नाम्नां शतत्रयम् ।
रहस्यातिरहस्यत्वाद्, गोपनीयं त्वया मुने ! ।।१
शिववर्णानि नामानि, श्रीदेव्या कथितानि तु ।
शक्त्यक्षरादिनामानि, कामेशकथितानि हि ।।२
उभयाक्षरनामानि, उभाभ्यां कथितानि तु ।
तदन्यैर्ग्रथितं स्तोत्रमेतस्य सदृशं किमु ? ।।३
नानेन सदृशं स्तोत्रं, श्रीदेवीप्रीतिदायकम् ।।४

।। श्रीसूत उवाच ।।

इति हयमुखगीतं स्तोत्रराजं निशम्य,
प्रगलितकलुषोऽभूच्चित्तपर्याप्तिमेत्य ।
निजगुरुमथ नत्वा कुम्भजन्मा तदुक्तेः,
पुनरधिकरहस्यं ज्ञातुमेवं जगाद् ।।५
अश्वानन! महाभाग! रहस्यमपि मे वद ।
शिववर्णानि कान्यत्र, शक्तिवर्णानि कानि च ।।६

---

१. ह्रीङ्कारास्थाननर्तकी, २. मणि, ३ कल्पद्रुवल्लरी।

उभयोरपि नामानि, कानि वा वद देशिक !

।। श्रीसूत उवाच ।।

इति पृष्टः कुम्भजेन, हयग्रीवोऽवदत् पुनः ।।७

।। श्रीहयग्रीव उवाच ।।

तव गोप्यं किमस्तीह, साक्षादम्बाऽन्वशाद् यतः ।।८
इदं त्वतिरहस्यं ते, वक्ष्यामि शृणु कुम्भज !
एतद्विज्ञानमात्रेण, श्रीविद्या सिद्धिदा भवेत् ।।९
कत्रयं हद्वयं चैव, शैवो भागः प्रकीर्त्तितः ।
शेषाणि शक्त्यक्षराणि, ह्रींङ्कार उभयात्मकः ।।१०
एवं विभागमज्ञात्वा, ये विद्याजपशालिनः ।
न तेषां सिद्धिदा विद्या, कल्पकोटिशतैरपि ।।११
चतुर्भिः शिवचक्रैश्च, शक्तिचक्रैश्च पञ्चभिः ।
नवचक्रैश्च संसिद्धं, श्रीचक्रं शिवयोर्वपुः ।।१२
त्रिकोणमष्टकोणं च, दशकोणद्वयं तथा ।
चतुर्दशारं चैतानि, शक्तिचक्राणि पञ्च च ।।१३
विन्दुश्चाष्टदलं पद्मं, पद्मं षोडशपत्रकम् ।
चतुरस्त्रं च चत्वारि, शिवचक्राण्यनुक्रमात् ।।१४
त्रिकोणे बैन्दवं श्लिष्टमष्टारेऽष्टदलाम्बुजम् ।
दशारयोः षोडशारं, भूगृहं भुवनास्त्रके ।।१५
शैवानामपि शाक्तानां, चक्राणां च परस्परम् ।
अविनाभावसम्बन्धं, यो जानाति स चक्रवित् ।।१६
त्रिकोणरूपिणी शक्तिर्बिन्दुरूपः परः शिवः ।
अविनाभावसम्बन्धं, तस्माद् बिन्दुत्रिकोणयोः ।।१७
एवं विभागमज्ञात्वा, श्रीचक्रं यः समर्चयेत् ।
न तत्फलमवाप्नोति, ललिताम्बा न तुष्यति ।।१८

ये च जानन्ति लोकेऽस्मिन्, श्रीविद्याचक्रवेदिनः ।
सामान्यवेदिनः सर्वे, विशेषज्ञोऽतिदुर्लभः ॥१९
स्वयं विद्याविशेषज्ञो, विशेषज्ञं समर्चयेत् ।
तस्मै देयं ततो ग्राह्यमशक्तस्तस्य दापयेत् ॥२०
अन्धं तमः प्रविशन्ति, येऽविद्यां समुपासते[2] ।
विद्याऽन्योपासकानेवं, निन्दत्यारुणकी[3] श्रुतिः ॥२१
अश्रुता सश्रुता सश्च, यज्वानो येऽप्ययज्वनः ।
स्वर्यन्तो नापेक्ष्यन्ते इन्द्रमग्निं च ये विदुः ॥२२
सिकता इव संयन्ति, रश्मिभिः समुदीरिताः ।
अस्माल्लोकादमुष्माच्चेत्याह चारण्यकी श्रुतिः ॥२३
यस्य नो पश्चिमं जन्म, यदि वा शङ्करः स्वयम् ।
तेनैव लभ्यते विद्या, श्रीमत्पञ्चदशाक्षरी ॥२४
इति मन्त्रेषु[4] बहुधा, विद्यायाः[5] महिमोच्यते ।
मोक्षैकहेतुविद्या तु, श्रीविद्या नात्र संशयः[6] ॥२५
न शिल्पादिज्ञानयुक्ते, विद्वच्छब्दः प्रयुज्यते ।
मोक्षैकहेतुविद्या[7] सा, श्रीविद्यैव न संशयः[8] ॥२६
तस्माद् विद्याविदेवात्र[9], विद्वान् विद्वानितीर्यते ।
स्वयं[10] विद्याविदे दद्याद्, ख्यापयेत्[11] तद्गुणान्सुधीः[12] ॥२७
स्वयं विद्यारहस्यज्ञो, विद्यामाहात्म्यवेद्यपि ।
विद्याविदं नार्चयेच्चेत्, को वा तं पूजयेज्जनः? ॥२८

---

१. विरला एव, २. ये न विद्यामुपासते, ३.निन्दत्यारण्यकी, ४. तन्त्रेषु, ५. श्रीविद्या, ६. मोक्षैकहेतुविद्यावान्, स वै विद्वानितीर्यते च, ७. मोक्षैकहेतुर्विद्या, ८.श्रीविद्या नात्र संशयः, ९. विद्याविदे देया, १०. तस्मै, ११. दापयेत्, १२.स्तुवन् ।

प्रसङ्गादेतदप्युक्तं, प्रकृतं शृणु कुम्भज !
यः कीर्त्तयेत् सकृद् भक्त्या, दिव्यं नाम्नां शतत्रयम् ।।२९
तस्य पुण्यफलं वक्ष्ये, दिङ्मात्रेण घटोद्भव !
रहस्यंनामसाहस्रपाठे यत्फलमीरितम् ।।३०
तत्कोटिकोटिगुणितं, त्वेकनामजपाद् भवेत् ।
कामेश्वरीकामेशाभ्यां, कृतं नामशतत्रयम् ।।३१
नान्येन तुलयेदेतत्, स्तोत्रेणान्यकृतेन तु ।
श्रेयः परम्परा यस्य, भाविनी चोत्तरोत्तरम् ।।३२
तेनैव लभ्यते चैतत्, पश्चाच्छ्रेयः परीक्षयेत् ।
अस्या नाम्नां त्रिशत्यास्तु, महिमा केन वर्ण्यते ? ।।३३
या स्वयं शिवयोर्वक्त्रपद्माभ्यां परिनिःसृता ।
महाषोडशिकारूपान्, विप्रानादौ तु भोजयेत् ।।३४
अभ्यक्तां तिलतैलेन[१], स्नाताऽनुष्णेन वारिणा ।
अभ्यर्च्य गन्धपुष्पाद्यैः[२], कामेश्वर्यादिनामभिः ।।३५
सूपापूपैः शर्कराद्यैः, पायसैः फल[३] संयुतैः ।।३६
विद्याविदो[४] विशेषेण, भोजयेत् षोडशद्विजान् ।
एवं नित्यार्चनं[५] कुर्यादादौ ब्राह्मणभोजनम् ।।३७
त्रिशतीनामभिः[६] पश्चाद्, ब्राह्मणान् क्रमशो यजेत्[७] ।
तैलाभ्यङ्गादिकं दद्याद्, विभवे सति भक्तितः ।।३८
शुक्लप्रतिपदारभ्य, पौर्णमास्यवधि क्रमात् ।
दिवसेदिवसे विप्राः, भोज्या विंशतिसंख्यया ।।३९
दशभिः पञ्चभिर्वापि, त्रिभिरेकेन वा दिनैः ।
त्रिंशत्षष्टिशतं विप्राः, सम्भोज्यास्त्रिशतं क्रमात् ।।४०

१. अभ्यङ्गैर्गन्धतैलेन, २. वस्त्रगन्धाद्यैः, ३. पल, ४. विद्याविदे,
५. नित्याबलिं, ६. त्रिशतैर्नामभिः, ७.ऽर्चयेत् ।

एवं यः कुरुते भक्त्या, जन्ममध्ये सकृन्नरः ।
तस्यैव सफलं जन्म, मुक्तिस्तस्य करे स्थिता ।।४१

रहस्यनामसाहस्रभोजनेऽप्येवमेव हि ।
आदौ नित्याबलिं कुर्यात्, पश्चाद् ब्राह्मणभोजनम् ।।४२

रहस्यनामसाहस्रमहिमा यो मयोदितः ।
स शीकराणुरत्रैकनाम्नो महिमवारिधेः ।।४३

वाग्देवीरचिते नामसहस्रे यद्यदीरितम् ।
तत्फलं समवाप्नोति, नाम्नोऽप्येकस्य कीर्तनात् ।।४४

एतदन्यैर्जपैः स्तोत्रैरर्चनैर्यत् फलं लभेत् ।
तत्फलं कोटिगुणितं, भवेन्नामशतत्रयात् ।।४५

रहस्यनामसाहस्रकोट्यावृत्त्या तु यत्फलम् ।
तद्भवेत् कोटिगुणितं, नामत्रिशतकीर्तनात् ।।४६

वाग्देवीरचितस्तोत्रे, तादृशी महिमा यदि ।
साक्षात् कामेशकामेशीकृतेऽस्मिन् बुध्यतां त्वया ।।४७

सकृत् सङ्कीर्तिते दिव्यनाम्नामस्मिन् शतत्रये ।
भवच्चित्तस्य पर्याप्तिर्नूनमन्यानपेक्षिणी ।।४८

न ज्ञातव्यमितोऽस्त्यन्यन्न. जप्तव्यं च कुम्भज !
यदसाध्यतमं कार्यं, तत्-तदर्थमिदं जपेत् ।।४९

तत्तत्सिद्धिमवाप्नोति, पश्चात् कार्यं परीक्षयेत् ।।५०

ये ये प्रयोगास्तन्त्रेषु, न तैर्यत् साध्यते फलम् ।
तत्सर्वं सिद्ध्यति क्षिप्रं, नामत्रिशतकीर्तनात् ।।५१

आयुष्करं पुष्टिकरं, पुत्रदं वश्यकारकम् ।
विद्याप्रदं कीर्त्तिकरं, सुकर्मत्वप्रदायकम् ।।५२
सर्वसम्पत्प्रदं सर्वसिद्धिदं सर्वसौख्यदम् ।
सर्वाभीष्टप्रदं चैव, देवीनामशतत्रयम् ।।५३
नाविद्याऽवेदिने ब्रूयान्नाभक्ताय कदाचन ।
न शठाय न दुष्टाय, नाविश्वासाय कर्हिचित् ।।५४
एतज्जपपरो भूयो, नान्यदिच्छेत् कदाचन ।।५५
एतत्कीर्त्तनसन्तुष्टा, श्रीदेवी ललिताऽम्बिका ।
भक्तस्य यद्यदिष्टं स्यात्, तत्तत् पूरयते ध्रुवम् ।।५६
तस्मात् कुम्भोद्भव मुने ! कीर्त्तय त्वमिदं सदा ।
अपरं किञ्चिदपि ते, बोद्धव्यं नावशिष्यते ।।५७

।। श्रीसूत उवाच ।।

एवमुक्त्वा हयग्रीवः, कुम्भजं तापसोत्तमम् ।
स्तोत्रेणानेन ललितां, स्तुत्वा त्रिपुरसुन्दरीम् ।।५८
आनन्दलहरीमग्नमानसः समवर्त्तत ।।५९

।।श्रीब्रह्माण्डपुराणे हयग्रीवागस्त्यसम्वादे
श्रीललितानामत्रिशत्युपदेशनामा
सर्वसम्पूर्त्तिस्तवः सम्पूर्णः।।

५. श्रीत्रिपुरास्तवराजः

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम् ।
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् ।।
वीरान् द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकम् ।
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ।।१
सेवे सिन्दूरसन्दोहसुन्दरस्वाङ्गभासुराम् ।
करुणापूरपीयूषकटाक्षां कुलनायिकाम् ।।२
द्विनेत्रं द्विभुजं शान्तं, गुरुं पद्मासनस्थितम् ।
योगपीठे समासीनं, नमामि शिरसि स्थितम् ।।३
नमामि सद्गुरुं शान्तं, प्रत्यक्षशिवरूपिणम् ।
शिरसा योगपीठस्थं, मुक्तिकामार्थसिद्धये ।।४
यां नित्या परमा शक्तिर्जगच्चैतन्यरूपिणी ।
तां नमामि महादेवीं, पञ्चमीं मातृरूपिणीम् ।।५
यस्याः सर्वं समुत्पन्नं, यस्यामद्यापि तिष्ठति ।
लयमेष्यति यस्यां तां, पञ्चमीं प्रणमाम्यहम् ।।६
श्रीमत्कल्पतरोर्मूले, भवान्या रत्नमन्दिरे ।
रत्नसिंहासने देव्याः, श्रीचक्रं प्रणमाम्यहम् ।।७
भूगृहं गुणरेखाढ्यं, वेदद्वारोपशोभितम् ।
त्रिवृत्तं षोडशदलं, तथाऽष्टदलकर्णिकम् ।।८
मनुकोणं द्विदिक्कोणं, वसुकोणं त्रिकोणकम् ।
मध्ये विन्दुमहाचक्रं, नित्यं श्रीत्रिपुरामयम् ।।९
ब्रह्माण्डाधारशक्तिश्च, कलास्मरपुरन्दराः ।
एताः संयोज्य पुरत, ईश्वरीं योजयेच्छिवे !।।१०

चन्द्रबीजं बिन्दुसंस्थं, शिवबीजं नियोजयेत् ।
मादनं शक्रबीजस्थं, योजयेद् भुवनेश्वरीम् ।।११

शिवबीजं मादनस्थं, शक्रषष्टिसमन्वितम् ।
सप्तमं तच्च शक्रस्थं, मायाबीजं समुद्धरेत् ।।१२

तुङ्गाक्षरं शिवादिस्थं, मरुदिन्द्रसमन्वितम् ।
धरन्धरसुताबीजमेकत्रापि नियोजयेत् ।।१३

बगलातुरीयबीजाधः, षोडशं च नियोजयेत् ।
वाक्स्थं तुरीयकं बीजं, शक्रबीजं नियोजयेत् ।।१४

पिनाकेशं चन्द्रसंस्थमाकाशं रससंस्थितम् ।
चतुर्थस्वरसंयुक्तं, नादविन्दुसमन्वितम् ।।१५

सर्वमेकत्र संयोज्य, पञ्चपञ्चाक्षरी* भवेत् ।
पञ्चकूटात्मिका विद्या, सर्वतन्त्रेषु गोपिता ।।१६

विद्याचूडामणिर्देवी, प्रोक्ता सर्वोत्तमोत्तमा ।
तव स्नेहान्मयाऽऽख्याता, नाख्येया यस्य कस्यचित् ।।१७

इन्द्रो मां रक्षयेत् प्राच्यामाग्नेय्यामग्निदेवता ।
याम्ये यमः सदा पातु, नैर्ऋते निर्ऋतिश्च माम् ।।१८

पश्चिमे वरुणः पातु, वायव्ये वायुदेवता ।
धनदश्चोत्तरे पातु, ऐशान्यामीश्वरोऽवतु ।।१९

ऊर्ध्वं प्रजापतिः पायादधश्चानन्तदेवता ।
एवं दश दिशो रक्षां, कुर्वन्त्वाशाऽधिदेवताः ।।२०

गणेशः सर्वदा पातु, क्षेत्रेशो रक्षयेत् सदा !
द्वारश्रीः सर्वदा पातु, देहली पातु सर्वदा ।।२१

गणनाथः सदा पातु, दुर्गा मां परिरक्षतु ।
वटुको भैरवश्चान्ते, क्षेत्रपालोऽभिरक्षतु ।।२२

---

* कएईलह्रीं हसकलह्रीं हकहलह्रीं हकएलह्रीं हकलसह्रीं ।

सह रत्या स्वपत्न्या च, कामदेवश्च सर्वदा ।
प्रीत्या सह वसन्तोऽपि, पातु मां नन्दने वने ।।२३
चक्रस्य पश्चिमद्वारे, भवान्या रत्नमन्दिरे ।
शङ्खपद्मनिधी रक्षां, कुरुतां कामसिद्धये ।।२४
पातु मां रत्नसोपानं, परमैश्वर्यशोभितम् ।
रक्षयेत् पश्चिमद्वारे, भवान्या रत्नमन्दिरे ।।२५
सरस्वती महालक्ष्मीर्माया दुर्गा विभूतये ।
भद्रकाली तथा स्वस्ती, स्वाहा चैव शुभङ्करी ।।२६
गौरी च लोकधात्री च, वागीश्वर्यादयो मम ।
एताश्चात्र स्थिताः सर्वा, रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ।।२७
पाषण्डाचारिणो भूता, भूमौ ये चान्तरीक्षगाः ।
दिवि लोके स्थिता ये च, ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ।।२८
वास्तूनामधिपो ब्रह्मा, स्रष्टा रक्षतु सर्वदा ।
कुलनाथः सदा पातु, द्वीपनाथोऽपि सर्वदा ।
शिवं कुर्वन्तु ताः सर्वा, आसने पञ्चदेवताः ।।२९
पृथ्वि त्वया धृता लोका, देवि! त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम् ।।३०
चक्रस्य दक्षिणे भागे, श्रीमत् पात्रस्य मण्डले ।
पञ्चरत्नानि मे पान्तु, पूजकानां च सिद्धये ।।३१
तत्र पात्रासने पुण्ये, सर्वदा वह्निमण्डले ।
वह्नेश्च मण्डलं पातु, कुलदेव्याश्च पूजने ।।३२
धूम्रार्चिरूष्मा ज्वलिनी, ज्वालिनी विस्फुलिङ्गिनी ।
सुश्रीः सुरूपा कपिला, हव्यकव्यवहे दश ।।३३
वह्नेर्दशकला ज्ञेयाः, सर्वधर्मफलप्रदाः ।
एताभिः सहितो रक्षां, कुर्याद् वैश्वानरो मम ।।३४

तत्र पात्रवरे दिव्ये, श्रीमदादित्यमण्डले ।
सूर्यस्य मण्डलं पातु, मम सर्वार्थसिद्धये ।।३५
तपिनी तापिनी धूम्रा, मरीचिर्ज्वालिनी रुचिः ।
सुषुम्ना भोगदा विश्वा, बोधिनी धारिणी क्षमा ।।३६
कभाद्यर्णयुता भानोष्ठडान्ता द्वादशेरिताः ।
एताः कलास्तु सूर्यस्य, सूर्यमण्डलसंस्थिताः ।
एताभिः सहितो रक्षामादित्यः प्रकरोतु मे ।।३७
तत्र पात्रामृते दिव्ये, सोमस्यामृतमण्डले ।
अमृतं सर्वदा पातु, भैरवानन्दहेतुकम् ।।३८
अमृता मानदा पूषा, तुष्टिः पुष्टी रतिर्धृतिः ।
शशिनी चन्द्रिका कान्तिर्ज्योत्स्ना श्रीः प्रीतिरङ्गदा ।।३९
पूर्णा पूर्णामृता कामदायिन्यः स्वरजाः कलाः ।
सोममण्डलमध्यस्था, रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ।।४०
रविवेदकलापूर्णे, सुधासम्पूर्णमण्डले ।
नक्षत्राधिपती रक्षां, करोतु मम भूतये ।।४१
सूर्याग्निमण्डले दिव्ये, सम्पूर्णे शशिमण्डले ।
पातु मां खेचरीबीजं, दोषैकादशनाशकृत् ।।४२
शक्तियुक्ते सुरानन्दे, भैरवाद्यैः सशक्तिभिः ।
आनन्दभैरवो रक्षां, करोतु मम सर्वदा ।।४३
तत्र पूर्णामृते पुण्ये, शक्तिर्या वारुणी कला ।
आनन्दरूपिणी रक्षां, करोतु मम सर्वदा ।।४४
सृष्टिर्बुद्धिः स्मृतिर्मेधा, कान्तिर्लक्ष्मीर्द्युतिः स्थिरा ।
स्थितिः सिद्धिरिति ख्याताः, कचवर्गकला दश ।।४५
अकारात् ब्रह्मणोत्पन्नाः, सृष्टिकर्मणि तत्पराः ।
एताभिः सहितः पायात्, ब्रह्मा मां वाक्प्रदः सदा ।।४६

जरा च पालिनी शान्तिरीश्वरी रतिकामिके ।
वरदा ह्लादिनी प्रीतिर्दीर्घा च टतवर्गगाः ।।४७
उकाराद् विष्णुसम्भूताः, स्थितिकर्मणि तत्पराः ।
एताभिः सहितः पायान्मां विष्णुः पुष्टिदायकः ।।४८
तीक्ष्णा रौद्री भया निद्रा, तन्द्री क्षुत् क्रोधिनी क्रिया।
उद्गारा मृत्युरूपा च, पयवर्गकला दश ।।४९
मकाराद् रुद्रसम्भूताः, संहारनिरताः सदा ।
एताभिः सहितो रुद्रो मां, पायान्मृत्युनाशकः ।।५०
तिरस्करिण्यः पशुहृत् पञ्चेन्द्रियविमोहना ।
अनन्तान्तास्तु ताः पञ्च, पीता श्वेताऽरुणाऽसिता ।।५१
विन्दोरीश्वरसम्भूताः, षळवर्गकलास्तथा ।
तिरोधानपराभिर्मां, पायादेताभिरीश्वरः ।।५२
निवृत्तिश्च प्रतिष्ठा च, विद्या शान्तिस्तथैव च ।
इन्धिका दीपिका चेति, रेचिका मोचिका परा ।।५३
सूक्ष्मा सूक्ष्मामृता ज्ञानामृता आप्यायिनी तथा ।
व्यापिनी व्योमरूपा च, अनन्ता चेति षोडश ।।५४
एताः स्वरकलानादात्, सदाशिवसमुद्भवाः ।।५५
अनुग्रहप्रदा नित्यं, सर्वसिद्धिप्रदायिकाः ।
एताभिः सहितः पायात्, सदा पूर्वः शिवस्तु माम् ।।५६
मातृका पातु मां नित्यं, सर्वमन्त्रस्वरूपिणी ।
अखण्डैकरसानन्दकरी मां पातु सर्वदा ।।५७
अमृतेशी सदा पातु, दीपिनी पातु सर्वदा ।
मूलविद्या च मां पातु, श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ।।५८
कामेश्वर्यादिभिर्युक्ता, नित्याभिः पातु मां सदा ।
सर्वाधो मण्डुकाकारे, रुद्रः कालानलो विभुः ।।५९

रक्षां करोतु मे नित्यं, या मूलप्रकृतिः सदा ।
ततश्चाधारशक्तिर्या, मम रक्षां करोतु सा ।।६०
कूर्मस्तु सततं पायादनन्तो रक्षयेत् सदा ।
तस्य मूर्ध्नि स्थितः श्वेतवराहः परिरक्षतु ।।६१
दन्ते तस्य स्थिता पृथ्वी, पातु नित्यं वसुन्धरा ।
समुद्रः सर्वदा पातु, सुरत्नैरमृतैर्जलैः ।।६२
रत्नद्वीपं च मे रक्षां, करोतु स्वर्णपर्वतः ।
पातु मां नन्दनोद्यानं, पान्तु मां कल्पभूरुहः ।।६३
अधस्तेषां सदा पातु, विचित्रा रत्नभूमिका ।
बालुकाः पञ्च मां पान्तु, पान्तु देवमहीरुहः ।।६४
नवरत्नमयास्तत्र, प्राकाराः पान्तु मां नव ।
श्रीरत्नमन्दिरं दिव्यं, चिन्तामणिविभूषितम् ।।६५
तत्र पद्मे महादिव्ये, प्रभामण्डलवेदिका ।
श्वेतच्छत्रं सदा पातु, रत्नमुक्तामणिप्रभम् ।।६६
प्रभामध्यस्थितं पातु, रत्नसिंहासनं च माम् ।
सिंहासनस्य पार्श्वस्थं, धर्मं ज्ञानं च रक्षतु ।।६७
वैराग्यं रक्षयेन्नित्यमैश्वर्यं रक्षयेत् सदा ।
अधर्मो रक्षयेन्नित्यमज्ञानं परिरक्षतु ।।६८
अवैराग्यं तु मां पायादनैश्वर्यं तु सर्वदा ।
सिंहासनस्य मध्यस्था, दुर्गा मां परिरक्षतु ।।६९
माया मां पातु तत्रैव, विद्या मां परिरक्षतु ।
श्रीविद्या शुद्धविद्या च, मातङ्गी भुवनेश्वरी ।।७०
वाराही च समाख्याताः, पञ्च विद्याश्च पान्तु माम् ।
अनन्तो रक्षयेन्नित्यं, फणपञ्चदशान्वितः ।।७१
तन्मध्यफणमध्यस्थं, महापद्मं च रक्षतु ।
पातु चानन्दकन्दं मां, ज्ञाननालं च सर्वदा ।।७२

दला प्रकृतिरूपा मां, प्रकृत्याकारकेसरैः ।
पातु मां पातु नित्यं, सा तत्त्वरूपा च कर्णिका ।।७३
सूर्यस्य मण्डलं पातु, पातु मां सोममण्डलम ।
वह्नेश्च मण्डलं पातु, सत्त्वं रक्षतु सर्वदा ।
रजश्च पातु मां नित्यं, पातु नित्यं तमोगुणः ।।७४
आत्मा चैवान्तरात्मा च, परमात्मा च रक्षतु ।
ज्ञानात्मा च तथा रक्षां, करोतु मम सर्वदा ।।७५
आत्मतत्त्वं शक्तितत्त्वं, विद्यातत्वं तथैव च ।
सदाशिवस्य यत्तत्त्वं, तत्सर्वं पातु मां सदा ।।७६
ज्ञानं माया कलाविद्या, तत्त्वात्मानो विभूतयः ।
रत्नसिंहासने देव्या, रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ।।७७
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च, ईश्वरश्च सदाशिवः ।
एते पञ्च महाप्रेता, रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ।।७८
सुधार्णवासनं पातु, पातु पोताम्बुजासनम् ।
देव्यासनं सदा पातु, पातु चक्रासनं च माम् ।।७९
सर्वमन्त्रासनं पातु, साध्यसिद्धासनं तथा ।
नवयोन्यासनं पातु, सर्वदा मम रक्षणम् ।।८०
करोतु कुलसुन्दर्याः, कामरूपं शिवासनम् ।
तत्रैव संस्थिता देव्यो, रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ।।८१
त्रिपुरा त्रिपुरेशी च, त्रिपुराद्या च सुन्दरी ।
त्रिपुरावासिनी पश्चात्, त्रिपुराश्रीश्च मालिनी ।।८२
सिद्धाम्बा भैरवीत्येतास्त्रिपुराद्याश्च पान्तु माम् ।
गुरवो दिव्यसिद्धौघमानवौघास्त्रिधा स्थिताः ।।८३
मुनिवेदनागसंख्या, रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ।
समस्तप्रकटा गुप्तास्तथा गुप्ततराश्च याः ।।८४

सम्प्रदायाः कुलोत्तीर्णा, निगर्भाश्च रहस्यकाः ।
तथैवातिरहस्याश्च, परापररहस्यकाः ।।८५

नवधा पूजनं तत्र, योगिनीनां विधीयते ।
एतास्तु सततं रक्षां, कुर्वतां योगिनीगणाः ।।८६

त्रैलोक्यमोहनं चक्रं, प्रथमं परिरक्षतु ।
अणिमा पश्चिमे पातु, लघिमा चोत्तरे तथा ।।८७

पूर्वद्वारे च महिमा, ईशिता पातु दक्षिणे ।
वशिता मारुते पातु, प्राकाम्या त्वीशके तथा ।।८८

भुक्तिसिद्धिस्तथाग्नेय्यामिच्छा रक्षतु नैर्ऋते ।
अधः पातु सदा प्राप्तिः, सर्वकामप्रदायिनी ।।८९

सर्वकामा सदा पातु, ऊर्ध्वे चोर्ध्वनिवासिनी ।
एताः प्रथमरेखायां, सर्वाः प्रकटपूरिताः ।।९०

भैरवश्चासिताङ्गो यः, कामरूपस्य पीठके ।
ब्रह्माणीसहितः पूर्वे, द्वारे मां परिरक्षतु ।।९१

मलये चाग्निदिग्भागे, संस्थितो रुरुभैरवः ।
माहेशीसहितः पातु, कुलाचारस्य सिद्धये ।।९२

चण्डः कोलगिरौ रक्षां, कौमारीसहितो यमे ।
करोतु भैरवो नित्यं, पूजकानां च सिद्धये ।।९३

वैष्णवीसहितः क्रोधः, कुलान्ते पीठराजके ।
नैर्ऋते सर्वदा पातु, भोगमोक्षार्थ सिद्धये ।।९४

चौहार्ये पश्चिमे पीठे, वाराहीसहितः सदा ।
उन्मत्तभैरवो रक्षां, करोतु मम सिद्धये ।।९५

जालन्धरे महापीठे, कपाली भैरवः सदा ।
इन्द्राणीसहितो रक्षां, वायव्ये प्रकरोतु मे ।।९६

ओड्याणे चोत्तरे पीठे, चामुण्डासहितः सदा ।
भीषणो भैरवः पातु, साधकानां च सिद्धये ।।९७

संहारश्चण्डिकायुक्तो, देवीकोष्ठे च पीठके ।
ऐशान्यां रक्षयेन्नित्यं, कुलाचारस्य सिद्धये ।।९८
एते द्वितीयरेखायां, संस्थिताश्चतुरस्रगाः ।
सर्वसंक्षोभिणी मुद्रा, पश्चिमे पातु सर्वदा ।।९९
द्राविणी चोत्तरे पातु, पूर्वे चाकर्षणी सदा ।
याम्ये वश्या सदा पातु, उन्मादा मारुते सदा ।।१००
ईशे महाऽङ्कुशा पातु, त्रिखण्डा पातु चानले ।
नैर्ऋते बीजमुद्रा च, ऊर्ध्वे रक्षतु खेचरी ।।१०१
महामुद्रा त्वधः पातु, योगिनी योनिरूपिणी ।
सुसिद्धयो मुद्रिकाश्च, भैरवाः सह मातृभिः ।।१०२
एताश्चक्रस्थिता नित्यं, सर्वकामफलप्रदाः ।
चतुरस्रे त्रिरेखासु, रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ।।१०३
सर्वाशापूरकं चक्रं, द्वितीयं परिरक्षतु ।
कामाकर्षणरूपा च, बुद्ध्याकर्षणरूपिणी ।।१०४
अहङ्काराकर्षणी च, शब्दाकर्षणरूपिणी ।
स्पर्शाकर्षणरूपा च, रूपाकर्षणरूपिणी ।।१०५
रसाकर्षणरूपा च, गन्धाकर्षणरूपिणी ।
चित्ताकर्षणरूपा च, धैर्याकर्षणरूपिणी ।।१०६
स्मृत्याकर्षणरूपा च, नामाकर्षणरूपिणी ।
बीजाकर्षणरूपा च, आत्माकर्षणरूपिणी ।।१०७
अमृताकर्षणी देवी, शरीराकर्षणी तथा ।
एताश्चक्रस्थिता नित्यं, स्वरार्णा षोडशे दले ।।१०८
सर्वाभीष्टप्रदा देव्यो, रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ।
सर्वसंक्षोभणं चक्रं, तृतीयं परिरक्षतु ।।१०९
अनङ्गकुसुमा पूर्वे, दक्षिणेऽनङ्गमेखला ।
पश्चिमेऽनङ्गमदना, उत्तरे मदनातुरा ।।११०

अनङ्गरेखा चाग्नेय्यां, नैर्ऋतेऽनङ्गवेगिनी ।
वातेऽनङ्गाङ्कुशा चैव, ईशे चानङ्गमालिनी ॥१११
कवर्गाद्यष्टवर्गस्था, अष्टौ चानङ्गशक्तयः ।
रक्षां कुर्वन्तु ताः सर्वा, देव्यश्चाष्टदले स्थिताः ॥११२
सर्वसौभाग्यदं चक्रं, चतुर्थं परिरक्षतु ।
सर्वसंक्षोभिणी शक्तिः, सर्वविद्राविणी तथा ॥११३
सर्वाकर्षणशक्तिश्च, सर्वाह्लादस्वरूपिणी ।
सर्वसम्मोहिनी शक्तिः सर्वस्तम्भनरूपिणी ॥११४
सर्वजृम्भणशक्तिश्च, सर्वतोवश्यरूपिणी ।
सर्वरञ्जनशक्तिश्च, सर्वोन्मादस्वरूपिणी ॥११५
सर्वार्थसाधिनी शक्तिः, सर्वसम्पत्तिपूरणी ।
सर्वमन्त्रमयी शक्तिः, सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करी ॥११६
चतुर्दशारचक्रस्था, रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ।
सर्वार्थसाधकं चक्रं, पञ्चमं परिरक्षतु ॥११७
सर्वसिद्धिप्रदा देवी, सर्वसम्पत्प्रदायिनी ।
सर्वप्रियङ्करी शक्तिः, सर्वमङ्गलकारिणी ॥११८
सर्वकामप्रदा देवी, सर्वदुःखविमोचिनी ।
सर्वमृत्युप्रशमनी, सर्वविघ्ननिवारिणी ॥११९
सर्वाङ्गसुन्दरी देवी, सर्वसौभाग्यदायिनी ।
बहिर्दशारचक्रस्था, रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ॥१२०
सर्वरक्षाकरं चक्रं, षष्ठं रक्षतु सर्वदा ।
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च, सर्वैश्वर्यफलप्रदा ॥१२१
सर्वज्ञानमयी देवी सर्वव्याधिविनाशिनी ।
सर्वाधारस्वरूपा च, सर्वपापहरा तथा ॥१२२
सर्वानन्दमयी देवी, सर्वरक्षास्वरूपिणी ।
तथैव हि महादेवी, सर्वेप्सितफलप्रदा ॥१२३

अन्तर्दशारचक्रस्था, रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ।
सर्वरोगहरं चक्रं, सप्तमं परिरक्षतु ।।१२४
वाग्देवी वशिनी पातु, पातु कामेश्वरी च माम् ।
मोदिनी विमला पातु, अरुणा जयिनी च माम् ।।१२५
सर्वेश्वरी च मे रक्षां, कुरुतां कौलिनी तथा ।
वाग्देव्यो वरदाः सन्तु, सर्वास्तुष्यन्तु पूजिताः ।।१२६
अष्टकोणान्तरे वाण्यो, रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ।
सर्वसिद्धिप्रदं चक्रमष्टमं परिरक्षतु ।।१२७
अष्टकोणान्तरस्थाने, त्रिकोणे बहिरायुधाः ।
श्रीमत्पाशाङ्कुशधनुर्वाणाश्चायुधदेवताः ।।१२८
षडङ्गदेवताः पान्तु, अङ्गस्थाश्चाङ्गदेवताः ।
महादेव्याश्चक्रसंस्था, रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ।।१२९
श्रीमत्त्रिकोणमध्ये तु, तत्र कोणत्रयेषु च ।
मध्ये च सर्वदा पान्तु, चतस्त्रः पीठदेवताः ।।१३०
कामे कामेश्वरी पातु, पूर्णे वज्रेश्वरी तथा ।
जालन्धरे महापीठे, पातु मां भगमालिनी ।।१३१
ओड्याणके महापीठे, महात्रिपुरसुन्दरी ।
सर्वानन्दमयं चक्रं, नवमं परिरक्षतु ।।१३२
सूर्येन्दुवह्निपीठे तु, बिन्दुचक्रनिवासिनी ।
ब्रह्मस्वरूपिणी पातु, श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ।।१३३
योनिमध्ये तु परितो, नित्याषोडशशक्तयः ।
देव्याः श्रीचक्रमध्यस्था, रक्षां कुर्वन्तु सर्वदा ।।१३४
त्रैलोक्यमोहने चक्रे, चतुरस्त्रे सुशोभने ।
पातु मामनिशं देवी, त्रिपुरा परमेश्वरी ।।१३५
सर्वाशापूरके चक्रे, षोडशारे मनोहरे ।
तत्र चक्रेश्वरी नित्यं, पातु मां त्रिपुरेश्वरी ।।१३६

तथाऽष्टदलचक्रे तु, सर्वसंक्षोभकारके ।
तत्र चक्रेश्वरी नित्यं, पायात् त्रिपुरसुन्दरी ।।१३७
चतुर्दशारचक्रे तु, शुभे सौभाग्यदायके ।
तत्र चक्रेश्वरी नित्यं, पायात् त्रिपुरवासिनी ।।१३८
सर्वार्थसाधके बाह्ये, दशारे चक्रराजके ।
त्रिपुराश्रीः सदा पातु, मम कल्याणहेतवे ।।१३९
अन्तर्दशारचक्रे तु, सर्वरक्षाकरे परे ।
नित्यं चक्रेश्वरी देवी, पायात् त्रिपुरमालिनी ।।१४०
अथाष्टकोणचक्रे तु, सर्वरोगहरे परे ।
पातु मां त्रिपुरासिद्धा, देवी चक्रेश्वरी सदा ।।१४१
सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे, गुणकोणे मनोहरे ।
चक्रेश्वरी च मे रक्षां, करोतु त्रिपुराम्बिका ।।१४२
सर्वानन्दमये चक्रे, मध्ये बिन्दौ सुशोभने ।
महाचक्रेश्वरी पातु, श्रीमत्त्रिपुरभैरवी ।।१४३
नित्याकामेश्वरी पातु, पातु मां भगमालिनी ।
नित्यक्लिन्ना च मां पातु, भेरुण्डा पातु सर्वदा ।।१४४
मां वह्निवासिनी पातु, महावज्रेश्वरी तथा ।
पातु मां शिवदूती च, त्वरिता रक्षयेत् सदा ।।१४५
कुलसुन्दरी मां पातु, नित्याऽनित्या च पातु माम् ।
नित्या नीलपताका च, विजया पातु सर्वदा ।।१४६
श्रीसर्वमङ्गला पातु, नित्या ज्वालांशुमालिनी ।
विचित्रा सर्वदा पातु, षोडशी पातु सुन्दरी ।।१४७
षोडशी प्रथमा नित्या, त्रिपञ्चतिथिगामिनी ।
अनुलोमविलोमेन, श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ।।१४८
महाविद्या तुरीया तु, पातु मां बहुरूपिणी ।
महासप्तदशी नित्या, नित्यमानन्दरूपिणी ।।१४९

पूर्वदक्षिणपश्चाच्च, उत्तरोर्ध्वमनुत्तमम् ।
बौद्धवैदिकशैवाश्च, सौरवैष्णावशाक्तका: ।।१५०
सृष्टिस्थितिलयाख्यानां, वासो रक्षतु सर्वदा ।
चतस्त्रः समयादेव्यो, योगिन्यः पान्तु सर्वदा ।।१५१
चतुरस्त्रे महाचक्रे, तारा मां परिरक्षतु ।
डाकिनी राकिणी पातु, लाकिनी काकिनी तथा ।
साकिनी हाकिनी पातु, याकिनी सर्वरूपिणी ।।१५२
वर्णस्था मातृकाः सर्वा, देहस्था मातृकाश्च याः ।
रक्षां कुर्वन्तु ताः सर्वाश्चक्रराजे तु पूजिताः ।।१५३
श्रीचक्रे पूजिता या याः, पूजिता ये न पूजिताः ।
सर्वास्ताः पूजिताः सन्तु, श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ।।१५४
चतुरस्त्रे महाचक्रे, बुद्धो मां परिरक्षतु ।
पातु मामनिशं देवः, षोडशारे प्रजापतिः ।।१५५
तथाऽष्टदलचक्रे तु, शिवो मां परिरक्षतु ।
चतुर्दशारचक्रे तु, भास्करो रक्षयेत् सदा ।।१५६
द्विदशारे तथा पातु, प्रभुर्नारायणो हरिः ।
अष्टारे मध्यचक्रे तु, पातु मां भुवनेश्वरी ।।१५७
अष्टारान्तस्त्रिकोणे तु, कालिका पातु सर्वदा ।
त्रिकोणान्तरचक्रे तु, पातु कात्यायनी च माम् ।।१५८
नवचक्रेश्वरी नित्या, या नित्या परमा कला ।
पातु मामनिशं देवी, श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ।।१५९
महात्रिपुरसुन्दर्याश्चिन्तनीया च या परा ।
ब्रह्मस्वरूपिणी पातु, पञ्चमी परदेवता ।।१६०
पञ्चमी पातु सततं, नित्यं रक्षतु पञ्चमी ।
शान्तिं करोतु सा नित्या, पञ्चमी परदेवता ।।१६१

सा पुनः पञ्चमी शक्तिर्नित्यचैतन्यरूपिणी ।
कारणानन्दमध्यस्था, पातु मां पञ्चमी सदा ।।१६२
पञ्चतत्त्वं तथा पञ्च, यत् किञ्चित् पञ्चमं स्मृतम् ।
नित्यं पञ्चगुणैः पातु, पञ्चमी परदेवता ।।१६३
पञ्चपञ्चाक्षरैर्मन्त्रैः, पञ्चकूटैश्च पञ्चभिः ।
पञ्चमी पातु सततं, नित्यं रक्षतु पञ्चमी ।।१६४
श्रीविद्या च तथा लक्ष्मीर्महालक्ष्मीस्तथैव च ।
त्रिशक्तिः सर्वसाम्राज्यलक्ष्मीः पञ्च प्रकीर्तिताः ।।१६५
श्रीविद्या च परंज्योतिः, परा निष्कलशाम्भवी ।
अजपा मातृका चेति, पञ्चकोशाः प्रकीर्तिताः ।।१६६
श्रीविद्या त्वरिता चैव, पारिजातेश्वरी तथा ।
त्रिपुटा पञ्चबाणेशी, पञ्चकल्पलताः स्मृताः ।।१६७
श्रीविद्याऽमृतपीठेशी, सुधासूरमृतेश्वरी ।
अन्नपूर्णेतिविख्याताः, पञ्च कामदुघाः स्मृताः ।।१६८
श्रीविद्या सिद्धलक्ष्मीश्च, मातङ्गी भुवनेश्वरी ।
वाराही पञ्चरत्नानामीश्वर्यश्च प्रकीर्तिताः ।।१६९
गणेशो वटुकश्चैव, क्षेत्रेशो योगिनीगणाः ।
तर्पिता बलिपात्राणि, सर्वे रक्षन्तु पूजिताः ।।१७०
ऐशान्यां सर्वदा पातु, नित्यं निर्माल्यवासिनी ।
शेषिका सुन्दरी पातु, बिन्दुचक्रनिवासिनी ।।१७१
नित्यं कामकला पातु, मुद्रा मां पातु खेचरी ।
शक्तिर्मां सर्वदा पातु, या मूलाधारवासिनी ।।१७२
मुद्रामन्त्रोपचारैस्तु, समस्ता देवताश्च याः ।
ताः श्रीश्च पूजिता चास्तु, श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ।।१७३

❖❖❖

।। फलश्रुतिः ।।

श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्याः, स्तवराजं मनोहरम् ।
पूजाक्रमेण कथितं, साधकानां सुखावहम् ।।१७४
क्रमेणानेन विधिना, श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीम् ।
सम्पूज्य साधकश्रेष्ठो, रक्षामन्त्रं सदा पठेत् ।।१७५
प्रातःकाले शुचिर्भूत्वा, निशायामर्धरात्रके ।
अथवा सङ्कटे प्राप्ते, राजस्थाने सुदुर्गमे ।।१७६
जले वाऽथ स्थले वापि, श्मशाने दुर्गमे गिरौ ।
यत्र यत्र भये प्राप्ते, स तत्रैव पठेन्नरः ।।१७७
सर्वावयवभावेन, देवीं सञ्चिन्त्य साधकः ।
रक्षां कुर्वीत यत्नेन, सर्वाशुभविनाशिनीम् ।।१७८
स्तोत्रं चाद्भुतमेवेदं, त्रैलोक्ये चापि दुर्लभम् ।
गोपनीयं प्रयत्नेन, यदीच्छेदात्मनो हितम् ।।१७९
यस्मै कस्मै न दातव्यं, न वक्तव्यं कदाचन ।
शिष्याय भक्तियुक्ताय, साधकाय प्रकाशयेत् ।।१८०
भ्रष्टेभ्यः साधकेभ्योऽपि, बान्धवेभ्यो न दर्शयेत् ।
दत्ते च सिद्धिहानिः स्यादित्याज्ञा शाङ्करी कृता ।।१८१
मन्त्राः पराङ्मुखा यान्ति, क्रुद्धा भवति सुन्दरी ।
अशुभं च भवेत् तस्य, तस्माद् यत्नेन गोपयेत् ।।१८२
यद्गृहे विद्यते स्तोत्रं, ग्रन्थे लिखितमुत्तमम् ।
चञ्चलाऽपि स्थिरा भूत्वा, कमला तत्र तिष्ठति ।।१८३
तस्माद् यत्नादिमं ग्रन्थं, पूजयेद्गन्धपुष्पकैः ।
पूजाफलं लभेन्नित्यं, सुन्दरीसन्निधिर्भवेत् ।।१८४
स्तवराजमिमं पुण्यं, यः पठेत् सुसमाहितः ।
यत् फलं लभते तस्माच्छृणुध्वं साधकोत्तमाः ।।१८५

वारमेकं तु योऽधीयात्, स पूजाफलमश्नुते ।
वेदिता मातृचक्रस्य, साधको भुवि जायते ।।१८६
मासमेतत् क्रमेणैव, पठेद्भक्तिपरायणः ।
स्वर्गेऽपि विदितो भूत्वा, देवीभक्तस्तु भूतले ।।१८७
भक्त्या च धारयेद्यस्तु, लिखित्वा स्तोत्रमुत्तमम् ।
शिखायामथवा कण्ठे, बाहौ वा भक्तिसंयुतः ।।१८८
स भवेत् साधकश्रेष्ठो, मातृणां च सदा प्रियः ।
लभते सर्वकामान् वै, परं स्वस्त्ययनं भवेत् ।।१८९
तस्मादिदं प्रयत्नेन, धारयेद्विधिना तथा ।
पठित्वा पूजयित्वा च, त्रैलोक्यं वशमानयेत् ।।१९०
भक्ताय ददते तस्मै, मन्त्रं रक्षाकरं परम् ।
धृत्वा सौवर्णमध्यस्थां,सर्वकामान् नरो लभेत् ।।१९१
यानि वाञ्छति कामानि, भुक्तिमुक्तिकराणि च ।
लभते नात्र सन्देहो, भुवि स्वर्गे रसातले ।।१९२
दृष्ट्वा च साधकश्रेष्ठं, ग्रहराक्षसहिंसकाः ।
दूरादेव पलायन्ते, न समर्थाश्च हिंसितुम् ।।१९३
विषं निर्विषतां याति, पापं निर्याति संक्षयम् ।
देववन्मानवो भूत्वा, भुनक्ति बहुलं सुखम् ।।१९४
तस्मान्नित्यं पठेद्धीमान्, मुक्तिकामार्थसिद्धये ।
भक्त्या च धारयेद्देवीं, स्वरक्षां सर्वदाऽऽचरेत् ।।१९५
पूर्वजातिपरिज्ञानवेद्यं जन्मसहस्रकम् ।
न पुनर्जायेत योनौ, मरणं नास्ति चापरम् ।।१९६
गन्धर्वरूपवान् भूत्वा, सम्पूज्य परमेश्वरीम् ।
रक्षामन्त्रं पठित्वा च, देवत्वं लभते ध्रुवम् ।।१९७

अपुत्रो लभते पुत्रं, दरिद्रो लभते धनम् ।
यं यं वापि स्मरेन्नित्यं, तं तमाप्नोति निश्चितम् ।।१९८
अतिदुःखालये कष्टे, भीमे निगळबन्धने ।
सकृत्पाठे कृते नित्यं, निगळान्मुच्यते ध्रुवम् ।।१९९
दुष्कृतैरभिचारैश्च, रोगैर्यक्ष्मादिभिश्च यः ।
परप्रयुक्तैर्ग्रस्तोऽपि, पठनान्मुच्यते नरः ।।२००
इमं त्रिपुरसुन्दर्याः, स्तवराजं मनोहरम् ।
रक्षामन्त्रं च शुभदं, शिवेन परिकीर्तितम् ।
यः पठेत् प्रयतो भक्त्या, सद्यो रोगात् स मुच्यते ।।२०१
आयुरारोग्यमैश्वर्यं, भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ।
सर्वान् कामानवाप्नोति, देवेन्द्रस्यापि दुर्लभान् ।।२०२

।।श्रीरुद्रयामले त्रिपुरास्तवराजः सम्पूर्णः।।

तान्त्रिकसन्ध्याविधिः

१.स्नानविधिः

ततो नद्यादौ, वैदिकस्नानोत्तरं **'श्रीललिताप्रीत्यर्थं तान्त्रिकस्नानं करिष्ये'** इति सङ्कल्प्य, जले पुरतो हस्तमात्रं चतुरस्र-मण्डलं परिगृह्य, तत्र—

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि, करैः स्पृष्टानि ते रवे !
तेन सत्येन मे देव ! तीर्थं देहि दिवाकर ! ।।

इति सूर्यमभ्यर्च्य—

आवाहयामि त्वां देवि! स्नानार्थमिह सुन्दरि !
एहि गङ्गे! नमस्तुभ्यं, सर्वतीर्थसमन्विते ।।

इति गङ्गामर्थयित्वा **'ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः क्रों'** इत्यङ्कुशमुद्रया सूर्यमण्डलं भित्त्वा, ततो गङ्गादिसर्वतीर्थावाहनोत्तरं **'वं'**— इति सलिलबीजेन सप्तवारमभिमन्त्र्य, मुहुर्मूलमावर्तयन् 'मूर्धनि त्रीनुदकाञ्जलीन् दत्वा, त्रिरपश्च पीत्वा **'क-१५ श्रीललितां तर्पयामि'**— इति त्रिस्तर्पणं, मूलेन त्रिः प्रोक्षणं च आत्मनो योनिमुद्रया विदध्यात्।

गृहे तु बिना तर्पणम्। अशक्तौ च स्मार्तेन पथा मन्त्रभस्म-स्नानयोरन्यतरं निर्वर्त्य मूलेन त्रिराचमनप्रोक्षणे केवलं कुर्यात्।

अथ धौते वाससी परिधाय विधृतपुण्ड्रो वैदिकीं सन्ध्यामभिवन्द्य तान्त्रिकीमाचरेत्।

२. प्रातःसन्ध्याविधिः

मूलेन आचम्य, मूलेन त्रिः प्राणानायम्य, **'ममोपात्तसमस्त-दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं '** (देशकालौ सङ्कीर्त्य) **श्रीराज-राजेश्वरीप्रीत्यर्थं** (देवीमानरीत्या सङ्कल्प्य) **श्रीविद्याप्रातः-सन्ध्यामुपासिष्ये।'**

श्रीनाथदिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं,
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम्।
वीरान्द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकं,
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्।।

गुरुपादुकामनुमुच्चार्य, सुमुखादिभिः पञ्चमुद्राभिः श्रीगुरुं प्रणम्य, मूलमन्त्रं ऋष्यादिध्यानान्तं विधाय, स्वपुरतः धेनुमुद्रया जलममृतीकृत्य, मूलविद्यया अष्टवारमभिमन्त्र्य, तेन जलेन षोडशस्वरैः सबिन्दुभिः **'अं नमः, आं नमः...अः नमः'**—इति मार्जयित्वा, दक्षिणहस्तेन जलमादाय, कादिमान्तैः स्पर्शवर्णैः मूलविद्यया च **'कं नमः, खं नमः ... मं नमः क-५, ह-६ स-४'**—इति जलं पीत्वा, यादिदशभिः मूलविद्यया च **'यं नमः रं नमः...क्षं नमः, क-५ ह-६ स-४'**—इति शिरसि प्रोक्ष्य, सूर्यमण्डले देवीं यथोक्तरूपां ध्यायेत्। ध्यानम्—

सुकुङ्कुमविलेपनामलिकचुम्बिकस्तूरिकां,
समन्दहसितेक्षणां सशरचापपाशाङ्कुशाम् ।
अशेषजनमोहिनीमरुणमाल्यभूषाम्बरां,
जपाकुसुमभासुरां जपविधौ स्मरेदम्बिकाम्।।

चतुर्भुजे ! चन्द्रकलावतंसे, कुचोन्नते ! कुङ्कुमरागशोणे !
पुण्ड्रेक्षुपाशाङ्कुशपुष्पबाणहस्ते! नमस्ते जगदेकमातः !।।

दक्षिणहस्ते जलमादाय **'लं वं रं यं हं'**—इति त्रिरभिमन्त्र्य **'क-५, ह-६, स-४'** इति च त्रिरभिमन्त्र्य, तज्जलबिन्दुभिः वामाङ्गुष्ठानामिकाभ्यां **'क-५, ह-६, स-४'**—इति स्वशिरसि त्रिः प्रोक्ष्य, अवशिष्टजलं वामहस्ते निधाय, तेजोरूपं तज्जलं इडयाऽऽकृष्य, स्वदेहान्तस्थितं सकलकलुषं प्रक्षालितं भावयित्वा, तज्जलं कृष्णवर्णं विभाव्य, पिङ्गलया बहिर्निर्गतं मत्वा, तज्जलं पुनः दक्षिणहस्ते कृत्वा, स्ववामभागे ज्वलद्वज्रशिलां ध्यात्वा **'४ श्लीं पशु हुं फट्'**—इति तस्यां शिलायामास्फाल्य, हस्तौ प्रक्षाल्य, मूलविद्यया जलमादाय, **'क-१५'**—इति प्रवहन्नाड्या सहस्रदलकमलगतपरमामृतेनैकीभूतं विभाव्य, राजदन्तविवरान्नेत्रमार्गेण निर्गमय्य, तज्जलं वामकरे निधाय, तेन जलेन **'अमृतमालिनी स्वाहा'**—इति मन्त्रेण सर्वाङ्गुलीभिः स्वशिरसि त्रिः प्रोक्ष्य, **'४ क-५, आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, ४ ह-६, विद्यातत्त्वं**

शोधयामि स्वाहा, ४ स-४, शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ४ स-४, शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, ४ ह-६, विद्यात्तत्वं शोधयामि स्वाहा, ४ क-५, आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। ४ क-१५, सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा'—इति त्रिधा। एवं नवधा जलं पिबेत्।

अर्घ्यमञ्जलिनाऽऽदायोत्थाय **'क-५, वाग्भवेश्वरि विद्महे, ह-६, कामेश्वरि च धीमहि, स-४, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्। श्रीमहात्रिपुर-सुन्दरीश्रीपादुकायै एषोऽर्घ्यः स्वाहा'**—इति त्रिरर्घ्यं दत्वा **'ह्रां ह्रीं ह्रूं सः श्रीसूर्य एषो तेऽर्घ्यः स्वाहा'**—इति सूर्याभिमुखमर्घ्याञ्जलित्रयं दत्वा, **'क-१५ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-श्रीपादुकां तर्पयामि नमः'**—इति देवीं त्रिः सन्तर्प्य, **'ह्रां ह्रीं ह्रूं सः श्रीसूर्यं तर्पयामि नमः'**—इति सूर्यं त्रिः सन्तर्प्य, मूलाधारे मूलविद्याप्रथमकूटं तटित्कोटिसमप्रभं सञ्चिन्त्य, तत्तेजः सुषुम्नावर्त्मना ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा, वहन्नासाऽध्वना आकाशस्थवह्नि-मण्डले समावाह्य तत्तेजसोद्भूतां वाग्भवेश्वरीं ध्यायेत्। तद्यथा—

पीतां पीताम्बरां पीतस्रग्विभूषानुलेपनाम् ।
तडित्कोटिसमाभासां, बालामक्षस्रगुज्ज्वलाम् ।।
पुस्ताभयकराम्भोजां, वह्निपीठे निषेदुषीम् ।
वाग्मिनीं वाग्भवोद्भूतां, त्रीक्षणां सुस्मितां स्मरेत् ।।इति।

ततः **'क-५, त्रिपुरावागीश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः'**—इति गन्धपुष्पाक्षतैस्त्रिः सम्पूज्य, **'ऐं त्रिपुरादेवि विद्महे, वाग्भवेश्वरि धीमहि, तन्नो मुक्तिः प्रचोदयात्। श्रीत्रिपुरावागीश्वरीश्रीपादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा'**—इति वाग्भवगायत्रीमुच्चार्य त्रिरर्घ्याञ्जलिमुत्क्षिप्य, पुनः प्रथमकूटमुच्चार्य, **'त्रिपुरावागीश्वरीश्रीपादुकां तर्पयामि नमः'** इति त्रिः सन्तर्प्य, श्रीगुरुपादुकां ध्यात्वा, प्राणायामत्रयं च कृत्वा, मातृकान्यासं कुर्यात्। पुनः ऋष्यादिकरषडङ्गन्यासं कृत्वा।

'४ क-५, वाग्भवेश्वरि विद्महे, ह-६, कामेश्वरि! च धीमहि, स-४, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्'—इति, तुरीयगायत्रीं, ततः **'ऐं त्रिपुरादेवि विद्महे, वाग्भवेश्वरि धीमहि, तन्नो मुक्तिः प्रचोदयात्'** इति वाग्भवकूटगायत्रीं, ततो मूलविद्यां, ततो वाग्भवकूटं च यथाशक्ति जपेत्।

३. अथ नाथपारायणम्

प्रातर्मूलाधारगते, कमले वह्निमण्डले ।
वाग्बीजरूपां नित्यां तां, विद्युत्पटलभासुराम् ।।
पुष्पबाणेक्षुकोदण्डपाशाङ्कुशलसत्कराम् ।
स्वेच्छागृहीतवपुषं, युगनित्याक्षरात्मिकाम् ।।
घटिकावरणोपेतां, परितः प्राञ्जलीनथ ।
ज्ञानमुद्रावरकरान् वाग्भवोपास्तितत्परान् ।
नवनाथान् स्मरेन्मूलपङ्कजे योनिमण्डले ।।

इति ध्यात्वा।

'४ क-१५' दिननित्यविद्या 'हंसः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ह्रीं श्रीं अं प्रकाशानन्दनाथरूपिणीश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः'।

'४ क-१५, दिन-नित्य-विद्या[1] हंसः ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ह्रीं श्रीं ॡं विमर्शानन्दनाथ०

'४ क-१५, कं खं गं घं ङं ह्रीं श्रीं कं आनन्दानन्दनाथ०

" " चं छं जं झं ञं ह्रीं श्रीं चं ज्ञानानन्दनाथ०

" " टं ठं डं ढं णं ह्रीं श्रीं टं सत्यानन्दनाथ०

" " तं थं दं धं नं ह्रीं श्रीं तं पूर्णानन्दनाथ०

" " पं फं बं भं मं ह्रीं श्रीं पं स्वभावानन्दनाथ०

" " यं रं लं वं शं ह्रीं श्रीं यं प्रतिभानन्दनाथ

" " षं सं हं ळं क्षं ह्रीं श्रीं षं सुभगानन्दनाथ०

इति नवनाथात्मकत्वेन मूलविद्यां जपेत् ।

१. दिन=देवीमानवर्षः। नित्यः=देवीमानमासः। विद्या= देवीमानदिवसः।

४. अथ उपस्थानम्

त्रिपुरा सर्वरूपाणि, चराणि स्थावराणि च ।
सायं प्रातस्तु मध्याह्ने, सर्वदा सा परा स्थिता ।।

उत्तमे शिखरे जाते, भूम्यां पर्वतमूर्धनि ।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता, गच्छ देवि! यथासुखम् ।।

गुं गुरुभ्यो नमः। दुं दुर्गायै नमः। गं गणपतये नमः। क्षं क्षेत्रपालकाय नमः। सं सरस्वत्यै नमः। पं परमात्मने नमः।

श्रीशिवाचार्यवर्याद्यां, शङ्कराचार्यमध्यमाम् ।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां, वन्दे गुरुपरम्पराम् ।।
दिव्यश्रीपादुकां ध्यात्वा, परितुष्याम्यहं सदा ।
श्रीगुरुं परमं वन्दे, पश्चात् तं परमं गुरुम् ।।
परमेष्ठिगुरुं वन्दे, परापरगुरुं भजे ।
आनन्दाख्यगुरुं वन्दे, तच्छिष्यस्तत्कृपावशः ।।
श्रीनाथादींश्च सम्पूज्य, सम्प्रदायक्रमादहम् ।

योगगोत्रं समुच्चार्य (परमेष्ठिगुरु-परमगुरु-स्वगुरु-नामानि आनन्दनाथशब्दवर्जमुच्चार्य) 'आनन्दस्वच्छन्द-चिद्रूपानन्दगोत्रः अमुकानन्दनाथ अमुकशर्माहं भो अभिवादये'।

इति प्रातःसन्ध्याविधिः।

५. अथ माध्याह्निकविधिः

प्राणायामादि सूर्यतर्पणान्तं प्रातःसन्ध्यावत् विधाय अनाहते मूलविद्याद्वितीयकूटं रक्तवर्णं ध्यायन् तत्तेजः सुषुम्नामार्गेण ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा वहन्नासापुटाध्वना निस्सार्य सूर्यमण्डले समावाह्य, तदुद्भूतां कामेश्वरीं ध्यायेत्। तद्यथा—

रक्तां सुरक्ताम्बरभूषणाढ्यां, पाशाङ्कुशाभीतिवरान् दधानाम् ।
शुचिस्मितामुत्कटयौवनाढ्यां, कामेश्वरीं नित्यं स्मरेत् त्रिनेत्राम् ।।

'४ ह-६, श्रीत्रिपुराकामेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः'—इति त्रिः सम्पूज्य, 'क्लीं त्रिपुरा देवि! विद्महे, कामेश्वरि! च धीमहि, तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्'—इति कामराजकूटगायत्रीमुच्चार्य 'श्रीत्रिपुरा-कामेश्वरीश्रीपादुकाय अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा'—इति त्रिरर्घ्याञ्जलि-

मुत्क्षिप्य पुनः कामराजकूटमुच्चार्य, **'श्रीत्रिपुराकामेश्वरीश्रीपादुकां तर्पयामि नमः'**—इति त्रिः सन्तर्प्य, श्रीगुरुपादुकां ध्यात्वा प्राणायामत्रयं च कृत्वा पूर्ववन्मातृकां विन्यस्य पुनः ऋष्यादिकरषडङ्गन्यासं कृत्वा।

'४ क-५, वाग्भवेश्वरि विद्महे, ह-६, कामेश्वरि च धीमहि, स-४, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्'—इति तुरीयगायत्रीं, ततः **'क्लीं त्रिपुरादेवि विद्महे, कामेश्वरि च धीमहि, तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्'**—इति कामराजकूटगायत्रीं, ततो मूलविद्यां ततः कामराजकूटं च यथाशक्ति जपेत्।

६. अथ तत्त्वपारायणम्

मध्याह्ने हृदयाम्भोजकर्णिके सूर्यमण्डले ।
कामराजात्मिकां देवीमलक्तकुसुमारुणाम् ॥
प्रसूनबाणपुण्ड्रेक्षुचापपाशाङ्कुशोज्ज्वलाम् ।
परितः स्वात्ममुख्याभिः, षट्त्रिंशत्तत्त्वशक्तिभिः ॥
रक्तमाल्याम्बरालेपभूषाभिः परिवारिताम् ।
युगनित्याक्षरमयीं, घटिकावरणां स्मरेत् ॥

इति देवीं ध्यात्वा—

४ क-१५, दिननित्या हंसः अं शिवतत्त्वरूपिणीश्रीमहात्रिपुरासुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ क...हंसः कं शक्तितत्त्वरूपिणीश्रीमहात्रिपुर०

,,	,,	**खं सदाशिवतत्त्व**		,,
,,	,,	**गं ईश्वर**	,,	,,
,,	,,	**घं शुद्धविद्या**	,,	,,
,,	,,	**ङं माया**	,,	,,
,,	,,	**चं कला**	,,	,,
,,	,,	**छं अविद्या**	,,	,,
,,	,,	**जं राग**	,,	,,
,,	,,	**झं काल**	,,	,,
,,	,,	**ञं नियति**	,,	,,
,,	,,	**टं पुरुष**	,,	,,

४ क...	हंसः	ठं प्रकृति	तत्त्वरूपिणी	श्रीमहात्रिपुर०
,,	,,	डं अहङ्कार	,,	,,
,,	,,	ढं बुद्धि	,,	,,
,,	,,	णं मनः	,,	,,
,,	,,	तं श्रोत्र	,,	,,
,,	,,	थं त्वक्	,,	,,
,,	,,	दं चक्षुष्	,,	,,
,,	,,	धं जिह्वा	,,	,,
,,	,,	नं घ्राण	,,	,,
,,	,,	पं वाक्	,,	,,
,,	,,	फं पाणि	,,	,,
,,	,,	बं पाद	,,	,,
,,	,,	भं पायु	,,	,,
,,	,,	मं उपस्थ	,,	,,
,,	,,	यं शब्द	,,	,,
,,	,,	रं स्पर्श	,,	,,
,,	,,	लं रूप	,,	,,
,,	,,	वं रस	,,	,,
,,	,,	शं गन्ध	,,	,,
,,	,,	षं आकाश	,,	,,
,,	,,	सं वायु	,,	,,
,,	,,	हं वह्नि	,,	,,
,,	,,	ळं जल	,,	,,
,,	,,	क्षं पृथ्वी	,,	,,

अत्र तत्तद्दिनतत्त्वमारभ्य तत्पूर्वदिनतत्त्वपर्यन्तं षट्त्रिंशदिति क्रमः।

इति तत्त्वपारायणम् ।

अथ उपस्थानं प्रातःसन्ध्यावत्

त्रिपुरा सर्वरूपाणि ... अभिवादये।।

इति माध्याह्निक-विधिः।

७. अथ सायं सन्ध्याविधिः

प्राणायामादि सूर्यतर्पणान्तं प्रातःसन्ध्यावत् विधाय।

आज्ञाचक्रे हक्षाब्जे मूलविद्यातृतीयकूटं शुद्धस्फटिकवर्णं ध्यायन् तत्तेजः सुषम्नामार्गेण ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा वहन्नासापुटाध्वना आकाशस्थसोममण्डले समावाह्य तदुद्भूतां अमृतेश्वरीं वृद्धां ध्यायेत्। तद्यथा—

शुक्लां शुक्लाम्बरालेपस्रग्विभूषाविभूषिताम् ।
जटाजूटत्रयां नेत्रत्रयोद्भासिमुखाम्बुजाम् ।।
ईषत्स्फुटितदंष्ट्रां च, भैरवीरूपमास्थिताम् ।
जरापलितसङ्कीर्णां, लम्बमानपयोधराम् ।।
पाशाङ्कुशौ पुस्तकं च, स्फटिकाक्षस्रजं करैः ।
दधानां शक्तिबीजोत्थां, पूर्णेन्दोर्मण्डले स्थिताम् ।।
ध्यायेदाद्यां परां शक्तिं, शक्तिमद्भिर्निषेविताम् ।
भोगमोक्षप्रदां शान्तामनन्ताममृतेश्वरीम् ।।इति।

'४ स-४, श्रीत्रिपुराऽमृतेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः'—इति त्रिः सम्पूज्य। पुनः **'सौः त्रिपुरादेवि! विद्महे शक्तीश्वरि! च धीमहि, तन्नोऽमृता प्रचोदयात्'**—इति तार्तीयीकगायत्रीमुच्चार्य **'श्रीत्रिपुराऽमृतेश्वरीश्रीपादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा,'**—इति त्रिरर्घ्याञ्जलिमुत्क्षिप्य पुनः शक्तिकूटमुच्चार्य **'श्रीत्रिपुराऽमृतेश्वरीश्रीपादुकां तर्पयामि नमः'**—इति त्रिः सन्तर्प्य श्रीगुरुपादुकां ध्यात्वा प्राणायामत्रयं च कृत्वा पूर्ववन्मातृकां विन्यस्य पुनः ऋष्यादिकरषडङ्गन्यासं कृत्वा।

'४ क-५, वाग्भवेश्वरि विद्महे ह-६, कामेश्वरि च धीमहि स-४, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्'—इति तुरीयगायत्रीं **'सौः त्रिपुरा देवि विद्महे शक्तीश्वरि च धीमहि। तन्नोऽमृता प्रचोदयात्'**—इति शक्तिकूटागायत्रीं, ततो मूलविद्यां ततः शक्तिकूटं च यथाशक्ति जपेत्।

८. अथ तिथिनित्यापारायणम्

४ अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरीनित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

४ आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये

भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं आं भगमालिनीनित्यारूपिणी श्रीमहात्रिपुर०

४ इं ओं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्ना-नित्यारूपिणीश्रीमहात्रिपुर०

४ ईं ओं क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डा-नित्यारूपिणीश्रीमहात्रिपुर०

४ उं ओं ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनीनित्यारूपि०

४ ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊं महाबज्रेश्वरी-नित्यारूपिणीश्रीमहात्रिपुर०

४ ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूतीनित्यारूपिणीश्रीमहा-त्रिपुर०

४ ॠं ओं ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षं ह्रीं फट् ॠं त्वरिता-नित्यारूपिणीश्रीमहात्रिपुर०

४ ऌं ऐं क्लीं सौः ऌं कुलसुन्दरीनित्यारूपिणीश्रीमहात्रिपुर०

४ ॡं हस्कल्रडैं हस्क्ल्रडीं हस्कल्रडौः ॡं नित्यानित्यारूपिणी-श्रीमहात्रिपुर०

४ एं ह्रीं फ्रें स्त्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं एं नीलपताकानित्यारूपिणीश्रीमहात्रिपुर०

४ ऐं भ्म्रयूं ऐं विजयानित्यारूपिणीश्रीमहात्रिपुर०

४ ओं स्वौं ओं सर्वमङ्गलानित्यारूपिणीश्रीमहात्रिपुर०

४ औं ओं नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूत-संहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनी-नित्यारूपिणीश्रीमहात्रिपुर०

४ अं च्क्लौं अं चित्रानित्यारूपिणीश्रीमहात्रिपुर०

४ अः क-१५ अः ललितामहानित्यारूपिणीश्रीमहात्रिपुर०

इति तिथिनित्यापारायणम् ।

अथ उपस्थानं प्रातःसन्ध्यावत् ।

त्रिपुरा सर्वरूपाणि...अभिवादये।

इति सायंसन्ध्याविधिः।

९. अथ तुरीयसन्ध्याविधिः

प्राणायामादितत्त्वाचमनपर्यन्तं प्रातःसन्ध्यावत् विधाय।

सहस्रारकमले मूलविद्यातुरीयकूटं त्रयोदशाक्षररूपं पद्मरागसमप्रभं ध्यात्वा, वहन्नासापुटेन तारकमण्डलाद् बहिः परमाकाशे समावाह्य, तदुद्भूतां भगवतीं तेजोरूपां ध्यायन् **'हसकल हसकहल सकलह्रीं'**— इति तुरीयकूटमुच्चार्य **'श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः'** इति त्रिः सम्पूज्य, पुनः **'क-५, वाग्भवेश्वरि विद्महे, ह-६, कामेश्वरि च धीमहि। स-४, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्'** इतितुरीय-गायत्रीमुच्चार्य, **'श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि स्वाहा'**—इति त्रिरर्घ्यं दत्वा पुनस्तुरीयकूटमुच्चार्य **'श्रीमहात्रिपुर-सुन्दरीश्रीपादुकां तर्पयामि'**—इति त्रिः सन्तर्प्य, श्रीगुरुपादुकामुच्चार्य, ततः तुरीयगायत्रीं ततो मूलविद्यां, ततस्तुरीयकूटं च यथाशक्ति जपेत्।

।। इति श्रीविद्यास्तोत्रपञ्चकं समाप्तम् ।।

उपयोगी प्रकाशन

हिन्दुओं की पोथी	२५.००
मुमुक्षु मार्ग (भाग १, भाग २)	५५.००
भैरवोपदेश	५०.००
क्या राम-चरित-मानस तन्त्र है?	३०.००
पूजा-रहस्य	५०.००
तन्त्र-कल्पतरु	४०.००
दीक्षा-प्रकाश	३५.००
साधना-रहस्य	३५.००
स्वर-विज्ञान	५०.००
मन्त्र-कोष	१५०.००
सचित्र मुद्राएँ एवं उपचार	१५.००
श्रीबगला-साधना	३५.००
नव-ग्रह-साधना	५०.००
महा-पर्व नवरात्र-विशेषांक	४५.००
महा-पर्व दीपावली-विशेषांक	३०.००
सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग	२०.००
श्रीयन्त्र-साधना	१५.००
श्रीयन्त्र-रहस्य	२०.००
विशुद्ध चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती)	२५.००
सप्तशती के विविध प्रकार	१५.००
श्रीबाला-कल्पतरु	३५.००
श्रीसूक्त-विधान	२०.००
श्रीरमा-पारायण	३५.००
दश महा-विद्या साधना	३०.००
दश महा-विद्या कवच	३०.००
दश महा-विद्या अष्टोत्तर शत-नाम	३०.००

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज - २११००६